राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें.....
9511151254

@swatantraprabhatmedia @swatantramedia RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) @SwatantraPrabhatonline news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, बुधवार, 19 नवंबर 2025

वर्ष 14,अंक 216, पृष्ट 04, मूल्यः 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

कस्बे में जाम की समस्या से लोग परेशान, हररोज ठप हो रही यातायात व्यवस्था..03

गोबरिया गाँव में बन रही सड़क पर भ्रष्टाचार के बादल, ग्रामीणों में उबाल..04

प्रशांत किशोर ने रखी नई शर्त, बोले- सरकार ने यह काम नहीं किया तो छोड़ दूंगा राजनीति

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पटना- बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में हार के ठीक 4 दिन बाद जन सुराज पार्टी के संस्थापक प्रशांत किशोर आज पटना में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित कर रहे हैं. यह प्रेस कॉन्फ्रेंस पटना के पाटिलपुत्र गोलंबर स्थित जन सुराज कैंप में चल रही है. प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान प्रशांत किशोर बिहार चुनाव में मिली हार को लेकर चर्चा की. प्रशांत किशोर ने कहा कि जिस दल को सिर्फ साढ़े 3 प्रतिशत वोट मिला उसमें इतने प्रेस के साथी आए. यह बड़ी बात, बिहार में हमने ईमानदार प्रयास किया, लेकिन सफलता नहीं मिली. प्रशांत किशोर ने कहा कि व्यवस्था परिवर्तन तो छोड़िए लेकिन सत्ता परिवर्तन भी हम नहीं करा सके. हमलोगों से जरूर कुछ गलती हुई होगी जिससे जनता ने विश्वास नहीं किया. प्रशांत किशोर ने कहा कि बिहार चुनाव में जनसुराज की हार की शत प्रतिशत जिम्मेवारी मैं खुद पर लेता हूं।

प्रशांत किशोर ने कहा कि हमलोग सामूहिक तौर पर हारे हैं और हमलोग आगे रणनीति बनाएंगे. प्रशांत किशोर ने कहा कि जो जीतकर आए उन्हें बधाई.अब नीतीश जी और पूरे एनडीए पर जवाबदेही है. अब रोजी रोजगार और सबसे बड़ा मुद्दा है पलायन का. सबकी आशाओं और सपनों पर खड़ा नहीं उतरने का सारा दोष मेरा है. मैं आप सबों से माफी मांगता हूं. आज से दो दिन बाद भीतहरवा आश्रम में एक दिन का मौन उपवास रखूंगा. मैं प्रायश्चित के तौर पर एक दिन का उपवास रखूंगा. पार्टी के अन्य लोग भी चाहे तो सभी लोग जहां हैं वहीं से सामूहिक उपवास करेंगे. गलती हमलोगों से हुई होगी लेकिन हमलोगों ने कोई गुनाह नहीं किया।

मैं पीछे नहीं हटने वाला हूं: प्रशांत किशोर

प्रशांत किशोर ने कहा कि बिहार में जहां सिर्फ जातियों की राजनीति होती है, हमने जातियों को अलग करने का गुनाह नहीं किया है. हमने हिंदू-मुस्लिम का भेदभाव भी नहीं किया है, जो लोग इन सबका सहारा लेकर जीत गए हैं, उन्हें आज नहीं तो कल, इसका हिसाब देना होगा. अभिमन्यु को मारकर भी महाभारत नहीं जीता गया था. कुछ लोग सोच रहे हैं कि मैं बिहार छोड़ दूंगा, यह उनकी गलतफहमी है. जनसुराज और पीके की जिद्द है बिहार को सुधारने की, और मैं इसे सुधार कर ही रहूंगा. मैं पीछे हटने वाला नहीं हूं, यह मेरा संकल्प है।

बिहार चुनाव में बांटे गए 29 हजार करोड़ रुपये

प्रशांत किशोर ने कहा कि यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बार सरकार ने 40 हजार करोड़ रुपये खर्च करने का वादा किया और इसी वजह से ह्रष्ठ को इतना वोट मिला. मेरा मानना है कि 10 हजार रुपये में लोगों ने कोई वोट नहीं बेचा. इस बहस का कोई अंत नहीं है, लोग चुनाव आयोग पर टीका-टिप्पणी कर रहे हैं. हर विधानसभा क्षेत्र में 60 से 62 हजार लोगों को 10 हजार रुपये दिए गए. पूरा सरकारी तंत्र लगाया गया. यह बताने के लिए कि आगे 2 लाख की सहायता मिलेगी. जीविका की दीदियों को लगाया गया, आंगनबाड़ी और आशा कार्यकर्ताओं की सैलरी बढ़ाई गई. आशा, ममता, और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं पर 10 हजार करोड़ और बाकी मिलाकर करीब-करीब 29 हजार करोड़ रुपये बांटे गए।

प्रशांत किशोर ने जारी किया हेल्पलाइन नंबर

प्रशांत किशोर ने कहा कि आपने जो 2 लाख देने का वादा किया है, उन महिलाओं को अब 6 महीने में 2-2 लाख दीजिए. अगर आपने नहीं दिया तो साफ है, आपने 10 हजार रुपए सभी से वोट खरीदने के लिए इस्तेमाल किया. मैंने 25 सीट की बात की थी और अब भी कायम हूं. अगर नीतीश कुमार 1.5 करोड़ लोगों को 2-2 लाख रुपए दे दें तो मैं राजनीति छोड़ दूंगा. अगर बिहार से इसके बाद पलायन रुक जाएगा, तो भी मैं राजनीति छोड़ दूंगा. नीतीश कुमार को 25 सीट से ज्यादा नहीं मिलेंगी. मैं एक नंबर जारी कर रहा हूं: 9121691216, जितने लोगों को 10-10 हजार रुपए मिले हैं, अब वो हर महिला जिन्हें दो लाख रुपए नहीं मिलते, मुझसे इस नंबर पर संपर्क करें।

PK ने पीएम मोदी और सीएम नीतीश से की अपील

प्रशांत किशोर ने कहा कि मैंने साढ़े 3 साल तक अभियान चलाया. लेकिन, अब नीतीश कुमार की जिम्मेवारी है. हमलोग सरकारी दफ्तरों से लेकर नीतीश कुमार के पास अब जाएंगे, अगर लोगों को 2-2 लाख रुपए नहीं मिला. सहारा में कहा गया था कि पैसा डबल हो जाएगा, जब सहारा भाग गया तो लोग एजेंट को खोज रहे. ऐसे में जो सरकारी अफसर, जीविका दीदी जो ये सौदा करवाई थीं, उन्हें लोग ढूंढेंगे. चुनाव से पहले भ्रष्टाचारी मंत्रियों को लेकर हमने प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी. नीतीश कुमार को कभी हमने भ्रष्टाचारी नहीं कहा. अब परिणाम के बाद लग रहा है, नीतीश जी बिल्कुल स्वस्थ हैं. प्रशांत किशोर ने कहा कि पीएम मोदी जी, अमित शाह जी और नीतीश जी को अब मंत्रिमंडल बनाने पर ध्यान देना चाहिए, जिन नेताओं के बारे में पहले कहा गया था, उनसे पीछे नहीं हटेंगे।

बिहार सरकार के भ्रष्ट मंत्रियों के खिलाफ जारी रहेगी लड़ाई

सरकार ने उन नेताओं पर कोई कार्रवाई नहीं की और जनता ने उन्हें भारी मतों से जीता दिया. ऐसे लोग अगर मंत्रिमंडल में शामिल होते हैं, तो जरूरत पड़ने पर कोर्ट भी जाऊंगा, जिन 4 नेताओं के बारे में जिक्र किया है, अगर वे सरकार का हिस्सा बनते हैं, तो कोर्ट जाने से नहीं हिचकिचाऊंगा. मैं किस पद पर हूं जो इस्तीफा दे दूंगा, राजनीति छोड़ दूंगा, लेकिन बिहार के लोगों की बातें करना नहीं छोड़ूंगा. अगर सरकार 2-2 लाख रुपए डेढ़ करोड़ लोगों को दे दे, तो मैं बिहार ही छोड़ दूंगा।

मधुबनी में उपेंद्र कुशवाहा के प्रत्याशी को कैसे मिल गए 1 लाख वोट: PK

मधुबनी विधानसभा क्षेत्र से उपेंद्र कुशवाहा के प्रत्याशी ने जीत हासिल की. वहां NDA के प्रत्याशी को 1 लाख से ज्यादा वोट मिले, मेरा सवाल है कि कितने वोटरों को उनका सिंबल पता था. भाजपा और जेडीयू के जहां प्रत्याशी नहीं थे, वहां ऐसे दल थे जिनका सिंबल लोगों को नहीं पता था. मधुबनी जैसे 5 सीटों का मैं उदाहरण दे रहा हूं. आखिर वहां के प्रत्याशियों को कैसे 1 लाख से अधिक वोट पड़ गए, जबकि लोगों को उनका चुनाव चिन्ह नहीं पता था।

प्रशांत के सभी प्रत्याशियों की जमानत हुई थी जब्त

बिहार विधान सभा की 243 सीटों में से जनु सुराज पार्टी ने 238 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारी थी. जहां 233 कैंडिडेट यानि 98 प्रतिशत प्रत्याशियों की जमानत जब्त हो गई. इसके अलावा बिहार की एक सीट मढ़ौरा पर कैंडिडेट दूसरे नंबर पर पहुंचा था. ऐसे में जनसुराज को लगभग बिहार चुनाव में 2 प्रतिशत मत मिला था. जनसुराज से अच्छा प्रदर्शन तो असद्दीन ओवैसी की AIMIM पार्टी 28 सीटों पर चुनाव लड़ी. जहां 5 सीटों पर जीत हासिल की. इसके अलावा मायावती बसपा पार्टी ने 1 सीट पर जीत हासिल की.

बता दें कि प्रशांत किशोर बिहार के रोहतास जिले से आते हैं. यहां विधान सभा की 7 सीटें हैं. यहां की सातों सीटों पर भी प्रशांत किशोर अपनी जमानत नहीं बचा पाए. उनकी विधान सभा करगहर में पार्टी के 7.42 प्रतिशत मत मिला. यहां भी पार्टी की जमानत जब्त हो गई.

यह कॉन्फ्रेंस बिहार की राजनीति में भूचाल ला सकती है. वर्ल्ड बैंक फंड विवाद पर अब विपक्ष हमलावर हो सकता है. वहीं, जन सुराज की रणनीति पर सबकी नजरें टिकी हैं. आखिर प्रशांत किशोर एनडीए पर क्या आरोप लगाएंगे. क्या लगने वाला आरोप ह्रष्ठ के लिए मुसीबत बनेगा।

गाजियाबाद में दर्दनाक हादसा... अचानक भरभराकर गिरी दीवार, मलबे में दबकर दो महिलाओं की मौत, दो पुरुष गंभीर रूप से घायल

उत्तर प्रदेश में गाजियाबाद के साहिबाबाद थाना क्षेत्र के पास बॉर्डर इलाके में सोमवार दोपहर दीवार गिरने से एक दर्दनाक हादसा हो गया. इस हादसे में दो महिलाओं की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दो शख्स गंभीर रूप से घायल हो गए. घटना उस समय हुई जब सभी लोग दीवार के पास बैठकर खाना खा रहे थे. दीवार अचानक भरभरा कर ढह गई और मलबे में चार लोग दब गए. हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस और स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे और घायलों को मलबे से निकालकर अस्पताल पहुंचाया. जानकारी के अनुसार, दोनों महिलाएं और घायल पुरुष पास के ही एक फैक्ट्री में मजदूरी का काम करते थे. दोपहर के समय वे दिन का खाना खाने के लिए पास के खाली प्लॉट में बैठ गए थे, जहां फैक्ट्री की पुरानी और जर्जर दीवार खड़ी थी. मजदूर अक्सर इसी स्थान पर बैठकर खाना खाते थे. सोमवार को भी वो वहीं बैठकर खाना खा रहे थे, लेकिन अचानक दीवार भरभराकर गिर गई।

मौके पर पहुंची पुलिस

हादसे की जानकारी मिलते ही थाना साहिबाबाद पुलिस मौके पर पहुंची और राहत-बचाव कार्य शुरू कराया. जेसीबी और स्थानीय लोगों की मदद से मलबा हटाया गया. मृतक महिलाओं के शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए गए हैं. पुलिस घटना की जांच कर रही है और फैक्ट्री प्रबंधन से पूछताछ की जा रही है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि दीवार कितनी पुरानी थी, क्या उसकी मरम्मत होनी चाहिए थी और क्या मजदूरों को बैठने के लिए सुरक्षित स्थान उपलब्ध कराया गया था।

संक्षिप्त ख़बरें

सऊदी उमरा हादसे में 44 भारतीयों की मौत बाद जेद्दा मिशन अलर्ट, भारत ने खोला आपात शिविर

जेद्दा स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास ने सऊदी अरब में बस दुर्घटना में मारे गए भारतीय उमरा जायरीनों के परिवारों की सहायता के लिए मदीना में एक शिविर कार्यालय स्थापित किया है। मिशन की तरफ से मंगलवार को यह जानकारी दी गयी। सोमवार तड़के मदीना के निकट एक बस और ईंधन टैंकर के बीच हुई टक्कर में उमरा के लिये गए 44 भारतीय मारे गए, जिनमें 42 तेलंगाना के थे। स्थानीय अधिकारियों ने पुष्टि की है कि एक भारतीय जीवित बचा है और उसका इलाज जारी है। सोशल मीडिया पर पोस्ट में वाणिज्य दूतावास ने कहा कि उसने दुर्घटना में मारे गए भारतीयों के परिवारों की सहायता के लिए मदीना स्थित भारतीय हज यात्री कार्यालय में शिविर कार्यालय स्थापित किया है। एक अलग पोस्ट में मिशन ने कहा कि महावाणिज्य दूत फहद अहमद खान सूरी ने दुर्घटना में जीवित बचे एकमात्र व्यक्ति अब्दुल शोएब मोहम्मद से मुलाकात की, जिनका फिलहाल मदीना के एक अस्पताल में इलाज जारी है। इसमें कहा गया, संबंधित अस्पताल अधिकारियों ने सूचित किया है कि उन्हें (अब्दुल को) सर्वोत्तम संभव चिकित्सा सुविधा प्रदान की जा रही है। वाणिज्य दूतावास उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता है। इस बीच, ईरान ने सऊदी अरब में सड़क दुर्घटना में मारे गए भारतीय तीर्थयात्रियों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की है। ईरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बाकेई ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में पीड़ितों के परिवारों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की तथा भारत की जनता और सरकार के साथ एकजुटता व्यक्त की। प्रवक्ता ने मृतकों के लिए मगफिरत की दुआ (उनके गुनाहों को माफ करने की दुआ) तथा घटना में घायल हुए लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की ईश्वर से प्रार्थना की।

महिला के लिए बेहद सुखद साबित हुआ SIR! 28 साल बाद घर लौटा 'मुर्दा' पति, श्राद्ध भी कर चुकी थी पत्नी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

देश भर में मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण यानी SIR को लेकर मचे बवाल के बीच एक महिला के लिए चुनाव आयोग का यह अभियान बेहद सुखद साबित हुआ है. इस एसआईआर की वजह से उसका टूट चुका घर फिर से बस गया है. उसका मुर्दा हो चुका पति घर लौट गया है. दरअसल, यह चमत्कार पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना जिले के बगदा गांव में हुआ है. यहां 28 साल से लापता जगबंदू मंडल अचानक सोमवार को अपने घर लौट आया. परिवार 1997 से ही उसे मृत मानकर श्राद्ध तक कर चुका था. 55 साल का जगबंदू फरवरी 1997 की एक ठंडी सुबह घर से निकला था और फिर कभी घर नहीं लौटा. पत्नी सुप्रिया दो छोटे-छोटे बच्चों के साथ अकेली रह गई. ढूंढने-खोजने के सारे प्रयास नाकाम होने पर ज्योतिषी ने भी मौत की पुष्टि कर दी थी. फिर सुप्रिया ने पति का श्राद्ध कर विधवा की जिंदगी स्वीकार कर ली थी. टाइम्स ऑफ इंडिया ने इस कहानी को प्रमुखता से छापा है।

लेकिन, सोमवार की दोपहर अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई. सुप्रिया ने दरवाजा खोला तो सामने वही मोटा-तगड़ा चेहरा था. आवाज भी बिल्कुल वही थी. पिता बिजय मंडल ने भी बेटों को पहचान लिया. जगबंदू ने बताया कि छत्तीसगढ़ में नौकरी चली गई, इसलिए वह लौटकर घर आ गया. लेकिन, असल वजह कुछ और थी. उनका नाम बगदा की मतदाता सूची से कब का कट चुका है. SIR में नाम बरकरार रखने के लिए मूल वोटर कार्ड और जमीन के कागजात चाहिए।

वोटर लिस्ट से कट चुका है नाम

बैंकुरा की वोटर लिस्ट में अभी भी उसका नाम है, इसलिए वह वापस आ गया. लेकिन बैंकुरा की लिस्ट में उसके नाम के बगल में 'सुलेखा मंडल' नाम देखकर गांव में खुसुर-फुसुर शुरू हो गई. सुलेखा का पति भी जगबंदू मंडल ही लिखा है. दूसरी शादी की शक की सुई घूमने लगी. लेकिन, जगबंदू ने दूसरी शादी से साफ इनकार किया. उसने बताया कि वह गुजरात गया, मुंबई रहा, थोड़े दिन बैंकुरा में रुका फिर आखिर में छत्तीसगढ़ में बस गया था. लेकिन उसने दूसरी शादी नहीं की. स्थानीय बूथ कमेटी सदस्य समीर गुहा ने बताया कि 2002 के बाद की SIR सूची में जगबंदू का नाम नहीं है, सिर्फ उसके पिता का है. वापसी के बाद वह अब मूल दस्तावेजों के आधार पर अपना नाम जुड़वाने की कोशिश कर रहा है. बूथ लेवल ऑफिसर (BLO) ने कहा कि 28 साल तक कहीं का कोई आधिकारिक प्रमाण नहीं है. नाम कट चुका है. दावे की जांच और नाम वापस डालना आसान नहीं होगा. मतदाता सूची ने जिस शख्स को 28 साल बाद घर खींच लाया, अब वही सूची तय करेगी कि जगबंदू मंडल सचमुच जिंदा हैं या नहीं।

SIR के खिलाफ दिसंबर में कांग्रेस की बड़ी रैली, जानें बैठक में और क्या लिए गए फैसले

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कांग्रेस ने बिहार विधानसभा चुनाव में करारी हार और 'वोट चोरी' के मुद्दे के बीच मंगलवार को उन 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के प्रभारियों, राज्य इकाई प्रमुखों, कांग्रेस विधायक दल के नेताओं और सचिवों की समीक्षा बैठक बुलाई थी. इस बैठक में ये तय किया गया कि दिसंबर के पहले हफ्ते में SIR के खिलाफ कांग्रेस की बड़ी रैली होगी. इसके साथ ही बैठक में जमीनी स्तर पर नेताओं की जवाबदेही और जिम्मेदारी तय करने का भी फैसला किया गया. रैली दिल्ली के रामलीला मैदान में होगी।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, राहुल गांधी के साथ ढाई घंटे चली बैठक में वरिष्ठ नेताओं और स्ट्रक्र प्रकिया होने वाले 12 राज्यों के विधायक दल नेता-प्रदेश अध्यक्ष शामिल हुए. सूत्रों के मुताबिक, बैठक में वरिष्ठ नेता और गुजरात के प्रभारी महासचिव मुकुल वासनिक ने दो-टूक कहा कि रैली और कार्यक्रम तो करने ही चाहिए लेकिन बूथ स्तर पर बीएलए की नियुक्ति हुई है या नहीं, वो जाकर एसआईआर का फॉर्म भरवा रहे हैं या नहीं. मानिटरिंग सेंटर काम कर रहा है या नहीं. इसकी पूरी पड़ताल होनी चाहिए. इसके बाद जहां कमजोरी दिखे

वहां बूथ स्तर से लेकर, प्रदेश अध्यक्ष, विधायक दल नेता से लेकर प्रभारी या महासचिव की जवाबदेही तय हो, कड़ा एक्शन हो।

बैठक में और क्या-क्या लिए गए फैसले

बैठक में ये सुझाव भी आया कि चलते चुनाव के दौरान 10 हजार रुपये महिलाओं को देने जैसी योजनाओं की तर्ज पर बाकी राज्यों में कोई कदम न उठे. साथ ही चुनाव आचार संहिता लगने के बाद वोटर लिस्ट में कोई नाम जोड़ा या घटाया न जाये. इसके लिए लीगल टीम को कानूनी उपाय तैयार करने को भी कहा गया. सूत्रों के मुताबिक, राहुल गांधी ने चुनाव आयोग पर हमला बोलते हुए कहा कि SIR प्रक्रिया को पारदर्शी तरीके से कराना चुनाव आयोग की जिम्मेदारी है, लेकिन वही गड़बड़ी कर रहा है तो लोकतंत्र बचाने के लिए हमको ये सब करना पड़ रहा है. हालांकि, इस बैठक की शुरुआत में शशि थरूर का नहीं आना चर्चा का विषय बना।

शशि थरूर बैठक में नहीं पहुंचे थे

इसको लेकर केसी वेणुगोपाल ने कहा कि उनको न्योता दिया गया था. शशि थरूर के दफ्तर के मुताबिक, उनकी तबियत ठीक नहीं, इसलिए वो इसमें शामिल नहीं हो पाए, जिसकी जानकारी केरल प्रभारी को दे दी थी. इसके बावजूद थरूर-कांग्रेस के बीच पिछले काफी वक्त से नरम-गरम का रिश्ता कयासों को बल तो देता ही है. दरअसल, एसआईआर का पहला चरण बिहार में विधानसभा चुनावों से पहले किया गया था।

12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में SIR

वहीं, इसका दूसरा चरण 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में होगा. चुनाव आयोग ने पिछले महीने इसकी घोषणा की थी. फाइनल वोटर लिस्ट विधानसभा चुनाव से महज दो महीने पहले सात फरवरी को प्रकाशित की जाएगी. SIR का दूसरा चरण पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़, गोवा, केरल, लक्षद्वीप, मध्य प्रदेश, पुडुचेरी, राजस्थान अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में होगा. एसआईआर का मकसद वोटर लिस्ट को अपडेट करना है. इसमें नए नाम जोड़ना, गलतियां सुधारना और पुराने नाम हटाना शामिल है।

इनसाइड स्टोरी... आरजेडी मीटिंग में तेजस्वी यादव ने कर दिया था इनकार, फिर बोले लालू प्रसाद और बदल दिया बैठक का माहौल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पटना- बिहार चुनाव परिणाम में महागठबंधन की करारी हार के कारणों को सोमवार को आरजेडी ने पार्टी के नवविर्वाचित विधायकों और चुनाव में खड़े किए गए उम्मीदवारों की मीटिंग बुलाई. पटना के एक पोलो रोड स्थित तेजस्वी यादव के सरकारी आवास पर बुलाए गए इस बैठक का एजेंडा मूल रूप से विधायक दल के नेता का चयन था. लेकिन तेजस्वी यादव ने बैठक की शुरुआत में ही कहा कि बिहार की जनता ने उन्हें विकल्प के रूप में स्वीकार नहीं किया, इसलिए नेतृत्व करना तर्कसंगत नहीं होगा. उनके इस रुख ने वहां मौजूद विधायकों को चौंका दिया और माहौल भारी हो गया।

तेजस्वी का इनकार, कमरे में छा गया सन्नाटा

राजद के सूत्रों के अनुसार, जैसे ही तेजस्वी यादव ने नेता प्रतिपक्ष का जिम्मा संभालने से मना किया, बैठक का माहौल बदल गया. विधायकों के चेहरे पर तनाव दिखने लगे. कुछ देर के लिए पूरा कमरा बिल्कुल शांत हो गया. कई विधायक इस स्थिति से असहज महसूस करने लगे, क्योंकि पार्टी पहले से चुनावी परिणामों की चुनौती से जूझ रही है. सभी राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव की ओर देखने लगे।

विधायकों की एक आवाज, तेजस्वी संभालें कमान

जानकारी के अनुसार, तेजस्वी यादव के इनकार के बाद कई विधायकों ने खुलकर कहा कि मौजूदा समय में संगठन को एक मजबूत और अनुभवी चेहरे की जरूरत है. उनका कहना था कि चुनावी झटके के बाद पार्टी को एकजुट रखने और विपक्ष की भूमिका को धार देने के लिए तेजस्वी से बेहतर कोई विकल्प नहीं है. कई विधायकों ने तेजस्वी के सामने आग्रह रखा कि वे अपनी जिम्मेदारी से पीछे न हटें।

लालू प्रसाद यादव के हस्तक्षेप से फिर माहौल बदला

सूत्र बताते हैं कि बैठक में नेताओं के बीच सन्नाटे की स्थिति को देख लालू प्रसाद यादव ने तत्काल ही हस्तक्षेप किया और मामले को संभाल लिया. उन्होंने कहा कि कठिन परिस्थितियों में भी तेजस्वी ने पार्टी का मनोबल बनाए रखा है. लालू यादव की इस अपील के बाद कमरे का तनाव धीरे-धीरे कम हुआ. तेजस्वी ने थोड़े विचार-विमर्श के बाद नेतृत्व संभालने पर हामी भर दी, जिससे बैठक पटरी पर लौट आई।

तेजस्वी यादव बने राजद विधायक दल के नेता

लालू के समझाने और विधायकों के समर्थन के बाद आखिरकार तेजस्वी यादव को विधायक दल का नेता चुन लिया गया. बैठक के अंत में तमाम विधायक यह उम्मीद जताते दिखे कि तेजस्वी के नेतृत्व में विपक्ष मजबूत भूमिका निभाएगा. बता दें कि बैठक में तेजस्वी यादव, लालू प्रसाद के साथ राबड़ी देवी, डॉ. मीसा भारती, अब्दुलबारी सिद्दिकी, जगदानंद सिंह, मंगनी लाल मंडल, उदय नारायण चौधरी, रणविजय साहू समेत पार्टी के दूसरे कई वरिष्ठ नेता उपस्थित रहे।

दिल्ली दंगे देश की संप्रभुता पर हमला... पुलिस ने SC में उमर और शरजील की जमानत किया विरोध, अगली सुनवाई 20 नवंबर को

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सुप्रीम कोर्ट में मंगलवार (18 नवंबर) को 2020 के पूर्वोत्तर दिल्ली दंगों के आरोपी उमर खालिद , शरजील इमाम और अन्य की जमानत याचिका पर सुनवाई हुई. इस दौरान दिल्ली पुलिस ने जमानत याचिकाओं का विरोध किया. कोर्ट में दिल्ली पुलिस का प्रतिनिधित्व कर रहे सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने सीएए विरोधी प्रदर्शन से भड़की हिंसा को सांप्रदायिक आधार पर समाज को बांटने का प्रयास बताया और कहा कि दंगे स्वाभाविक नहीं बल्कि पूर्व नियोजित थे. उन्होंने शरजील सहित अन्य की ओर से दायर जमानत याचिका को खारिज करने की मांग की. उन्होंने यह भी दावा किया कि अभियुक्तों ने मुकदमे को पटरी से उतारने या उसमेंपूर्व नियोजित थे.देरी करने के इरादे से आरोप तय करने में बाधा डाली, इसलिए विचाराधीन कैदी के रूप में पांच साल जेल में बिताना उनकी ज़मानत पर विचार करने का आधार नहीं होना चाहिए. मेहता ने तर्क दिया कि मामले की सुनवाई में देरी के लिए आरोपी ज़िम्मेदार हैं, जो विवाद का एक प्रमुख मुद्दा रहा है. उन्होंने कोर्ट को बताया कि यह समाज को सांप्रदायिक आधार पर बांटने का प्रयास था,यह केवल सीएए के खिलाफ आंदोलन नहीं था'।

'यह दंगा राष्ट्र की संप्रभुता पर हमला था'

दिल्ली में फरवरी 2020 में हुए दंगों में उमर खालिद, शरजील इमाम और अन्य द्वारा दायर जमानत याचिकाओं का कड़ा विरोध करते हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि यह दंगा राष्ट्र की संप्रभुता पर हमला था. अरविंद कुमार और जस्टिस एनवी अंजारिया की बेंच से मेहता से कहा 'सबसे पहले इस मिथक को तोड़ा जाना चाहिए. यह कोई स्वाभाविक दंगा नहीं था. यह एक सुनियोजित, सुनियोजित, पूर्व नियोजित दंगा था. यह एकत्रित साक्ष्यों से सामने आएगा'।

शरजील इमाम पर आरोप

मेहता ने आगे कहा, 'शरजील इमाम का कहना था कि उनकी दिली इच्छा है कि हर उस शहर में 'चक्का जाम' हो जहां मुसलमान रहते हैं. सिर्फ दिल्ली में ही नहीं. उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया पर यह कहानी गढ़ी जा रही थी कि युवाओं के साथ कुछ बहुत गंभीर हो रहा है. उन्होंने कहा कि आरोपी शरजील इमाम ने मुसलमानों को एकजुट होने और दिल्ली सहित शहरों को ठप करने के लिए प्रेरित किया था।

फरवरी 2020 में हुए थे दंगे

खालिद, इमाम, गुलफिशा फातिमा, मीरान हैदर और रहमान पर फरवरी 2020 के दंगों के मास्टरमाइंड होने के आरोप में आतंकवाद विरोधी कानून और तत्कालीन आईपीसी के प्रावधानों के तहत मामला दर्ज किया गया था, जिसमें 53 लोग मारे गए थे और 700 से अधिक घायल हुए थे. इस मामले की अगली सुनवाई 20 नवंबर को होगी।

मुख्यमंत्री होकर भी अब उछल-कूद नही कर सकेंगे नीतीश कुमार

प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी का ये कथन इस बार के बिहार के जनादेश पर सही उतरता है कि बिहार दुनिया को राजनीति सिखाता है। इस जनादेश ने जहां विपक्षी दलों को उनकी औकात बता दी,वहीं नीतीश कुमार को भी बता दिया कि अगले पांच साल भाजपा के बिना गुजारा नही है। मुख्यमंत्री बने रहना है तो भाजपा को साथ लेकर चलना होगा। उसे नजर अंदाज कर मुख्यमंत्री नही रह सकते। इस बार आप पाला नही बदल पाओगे। भाजपा के दबाव में काम करना होगा। बिहार में नई सरकार गठन को लेकर तस्वीर अब काफी हद तक साफ होती दिख रही है। एनडीए गठबंधन के मुख्यमंत्री के तौर पर नीतीश कुमार की ही ताजपोशी होगी, जबकि बीजेपी को दो डिप्टी सीएम दिए जाने की चर्चा तेज है। इस बार भाजपा न सिर्फ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है, बल्कि जेडीयू के बगैर भी वह एनडीए के अन्य सहयोगियों के साथ जादुई आंकड़े को पार कर गई । ऐसे में नीतीश कुमार के लिए भाजपा के साथ किसी तरह का बिहार में बार्गेनिंग करना अब सरल नहीं रह गया है। भाजपा के शीर्ष नेतृत्व की ओर से यह बार-बार दोहराया गया है कि चुनाव के बाद भी परिणाम चाहे जो भी आएं, गठबंधन के चेहरे नीतीश कुमार ही बने रहेंगे। जेडीयू की ओर से भी यह बात दोहराई गई है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ही होंगे। वैसे ये तय है कि ज्यादा सीट मिलने के कारण नीतीश कुमार के मंत्री मंडल में भी भाजपा के मंत्रियों की संख्या भारी होगी। बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए की ऐतिहासिक जीत ने एक बार फिर बता दिया कि ये चमत्कार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के करिश्माई व्यक्तित्व, गृहमंत्री अमित शाह की चुनावी रणनीति की देन है। एनडीए की जीत के पीछे उनके 10 प्रमुख वादे पंचामृत गारंटी, रोजगार सृजन, ,महिलाओं के लिए योजनाएं, मुफ्त शिक्षा, कृषि सुधार तथा बुनियादी ढांचे का विकास आदि शामिल है। इस बार के चुनाव की विशेषता यह भी है कि बिहार की 243 सीट में एनडीए गठबंधन को 202 ,महागंठबंधन को 35, एआईएमआईएम को पांच और अन्य को एक सीट मिली। भाजपा को 89 सीट मिली और वह प्रदेश की सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। नीतीश कुमार की जदयू को 85 सीट मिली। 1951 के बाद बिहार में इस बार सबसे ज्यादा 67.13 प्रतिशत मतदान हुआ। ये मतदान पिछले विधानसभा चुनाव से 9.6 प्रतिशत ज्यादा है। इस बार के मतदान में पुरुषों की हिस्सेदारी 62.98 प्रतिशत रही और महिलाओं की 71.78 प्रतिशत। पुरुषों की तुलना में महिलाओं का मतदान 8.15 प्रतिशत ज्यादा रहा । ऐसा लगता है कि एनडीए ने एकतरफा बिहार की महिलाओं का विश्वास जीता है। महागठबंधन की करारी हार बताती है कि चुनावी रैलियों में भीड़ जरूर इकट्ठी हुई, भाषणों में तीखे हमले भी हुए, लेकिन विपक्ष जनता का विश्वास नही जीत सका। इन चुनावों की बड़ी देन चिराग पासवान का उभार रहा। उन्होंने यह साबित कर दिया कि वे भविष्य के निर्णायक खिलाड़ी हैं। सीटों पर उनकी मजबूत पकड़ ने यह बता दिया कि वे आने वाले वर्षों में बिहार की राजनीति को नए सिरे से लिखेंगे। इस बार के चुनाव में पहली बार 'जन सुराज पार्टी ' नामक एक नया राजनैतिक दल ने भी बिहार की राजनीति में अपनी ज़ोरदार उपस्थिति दर्ज कराने के लिए सभी 243 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किए।बड़ी बात यह है कि इस पार्टी के लगभग सभी उम्मीदवार शिक्षित,बुद्धिजीवी,पूर्व नौकर शाह,पूर्व आई ए एस,आई पी एस,वैज्ञानिक,गणितज्ञ तथा शिक्षाविद हैं, किंतु किसी को विजय नही मिली। जन सुराज पार्टी ' के संस्थापक व अकेले रणनीतिकार व स्टार प्रचारक वही प्रशांत किशोर हैं, जो नरेंद्र मोदी व भाजपा से लेकर देश के अधिकांश राजनैतिक दलों व नेताओं के लिये एक पेशेवर के रूप में चुनावी रणनीति तैयार करने के बारे में जाने जाते हैं। पार्टी की बुरी हार ने यह साबित कर दिया कि उनके दावों में कोई दम नही था। इस बार ऐतिहासिक जीत के बाद बिहार की जनता को एनडीए से अपेक्षाएं भी बहुत हैं। देखना है कि एनडीए सरकार उनकी अपेक्षाओं पर कैसे खरी उतरती है।

एनडीए को सुशासन लाने, रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए काम करने के साथ साथ राज्य में ऐसी भी व्यवस्था करनी होगी कि बिहार में तस्करी से शराब न आ सके। शराब बंदी पूरी तरह और सख्ती से लागू हो। कुल मिलाकर बिहार की जनता ने जो भारी मतदान किया वह जंगलराज, परिवारवाद तथा भ्रष्टाचार के खिलाफ है। मतदान सुशासन, स्त्री सुरक्षा और पलायन रोकने के पक्ष में है। विपक्ष ने बिहार के जेन- जी को भड़काने का प्रयास किया लेकिन उसने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर भरोसा जताया। बिहार के चुनाव परिणाम साधारण नहीं है। इनका परिणाम भारत के भविष्य के निर्माण की दिशा तय करने वाला है।इस चुनावी जनादेश को जनविश्वास की कसौटी से देखना होगा। विश्लेषकों द्वारा बिहार विधानसभा 2025 चुनाव में राजग की जीत सुनिश्चित मानी जा रही थी तथापि महागठबंधन की इतनी करारी हार की आशंका किसी को नहीं थी, राजग और महागठबंधन के नेताओं को भी नहीं। इन परिणामों ने सभी को चौंकाया है। राजग की अप्रत्याशित जीत, भाजपा नीत मोदी सरकार तथा बिहार में नीतीश सरकार पर जनता के भरोसे की जीत है। बीस वर्ष बाद भी लालू के शासनकाल का जंगलराज जनता भूल नहीं पाई है । बिहार की जनता ने जातिवाद, परिवारवाद, मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीतिक को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया है। गरीब, महिला, किसान और युवा मतदाता का नया समीकरण स्पष्ट दिखाई दे रहा है। बिहार के 2025 विधानसभा चुनाव न केवल एक राजनीतिक जीत है बल्कि लोकतांत्रिक पुनर्पुष्टि का संकेत हैं। एनडीए की जीत स्पष्ट और व्यापक है, जो महिलाओं, जातिगत गठजोड़, संगठनात्मक मजबूती और मजबूत कल्याण नीतियों के मिश्रण से संभव हुई। वहीं, विपक्ष को यह सोचना होगा कि उसका जनसंवाद आखिर कहाँ चूक गया और भविष्य में उसे कैसे समायोजित किया जाए। यह परिणाम बिहार की राजनीति के अगले अध्याय की शुरुआत हो सकती है – लेकिन यह भी सच है कि लोकतंत्र अब और अधिक सक्रिय, उत्तरदायी और बहुआयामी होता जा रहा है। भविष्य में न सिर्फ पार्टियों की राजनीतिक रणनीतियाँ, बल्कि उनके विकास मॉडल और सामाजिक संकल्प भी इस मतदाता-जनादेश द्वारा परख की जाएँगी।

अशोक मधुप

ब्रिटिश तानाशाही के खिलाफ सबसे निडर विद्रोही थे बटुकेश्वर दत्त

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अनेक ऐसे नाम हैं जिनका योगदान अतुलनीय रहा है, परंतु जिनके जीवन और संघर्ष को आज भी वह स्थान नहीं मिला जिसके वे सच्चे हकदार थे। बटुकेश्वर दत्त ऐसा ही एक नाम हैं—एक ऐसा क्रांतिकारी, जिसने केवल ब्रिटिश राज के विरुद्ध संघर्ष नहीं किया, बल्कि न्याय और समानता के लिए अपने पूरे अस्तित्व को दांव पर लगा दिया। 18 नवम्बर 1910 को बंगाल के बर्दवान जिले के एक छोटे से गाँव में जन्मा यह युवक अपनी युवा अवस्था में ही राष्ट्रीय चेतना से इस कदर ओतप्रोत हो गया कि पूरी जिंदगी स्वतंत्रता के आदर्शों के प्रति समर्पित कर दी। आज जब हम स्वतंत्र भारत की उपलब्धियों और चुनौतियों पर विचार करते हैं, तब यह जरूरी हो जाता है कि उन अनदेखे नायकों को भी याद किया जाए जिन्होंने अपने साहस, तप और त्याग से इस देश को आज़ादी की राह दिखाई। कानपुर में पढ़ाई के दौरान बटुकेश्वर दत्त की मुलाकात भगत सिंह से हुई। यह संयोग नहीं, बल्कि इतिहास की नियति थी। दोनों के बीच विचारों का ऐसा आदान-प्रदान हुआ जिसने दत्त के व्यक्तित्व में क्रांतिकारी ऊर्जा का संचार किया। वे हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन से जुड़े और शीघ्र ही संगठन के विश्वसनीय सदस्य बन गए। 1920 के दशक के अंत में जब ब्रिटिश सरकार लगातार दमनकारी कानून लागू कर रही थी, तब क्रांतिकारी गतिविधियों का स्वरूप भी व्यापक और वैचारिक हो रहा था। इसी संदर्भ में 1929 में ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रस्तावित श्रमिक-विरोधी बिल के विरोध ने आंदोलन को नई दिशा दी। यह बिल न केवल मजदूरों की हड़ताल के अधिकार पर चोट करता था, बल्कि साम्राज्यवादी नियंत्रण को और अधिक मजबूत बनाता था। इस अन्याय के प्रतिकार में दत्त और भगत सिंह ने प्रतीकात्मक बम विस्फोट की योजना बनाई—एक ऐसा विस्फोट, जिसका उद्देश्य किसी प्रकार की हिंसा नहीं, बल्कि दमनकारी शासन के प्रति जनता की चेतना को जगाना था।8 अप्रैल 1929 को दिल्ली की केंद्रीय विधानसभा में किया गया बम विस्फोट भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की दिशा बदल देने वाली घटना साबित हुआ। विस्फोट के बाद दत्त और भगत सिंह वहीं खड़े रहे, नारे लगाए, पर्चे फेंके, और स्वयं गिरफ्तारी दी। यह कदम इस बात का प्रतीक था कि उनकी लड़ाई हिंसा से नहीं, बल्कि अन्याय के खिलाफ सशक्त वैचारिक प्रतिरोध से थी। उस दिन उन्होंने ब्रिटिश सरकार को अहसास कराया कि भारतीय युवाओं की क्रांति केवल बंदूक का शोर नहीं, बल्कि आत्मबल और विवेक का विस्फोट भी है। गिरफ्तारी के बाद बटुकेश्वर दत्त को आजीवन कारावास की सज़ा दी गई और उन्हें काला पानी की भयावह जेल भेजा गया। सेल्युलर जेल की यातनाएँ किसी भी मनुष्य को तोड़ने के लिए पर्याप्त थीं, लेकिन दत्त ने इन्हें संघर्ष का एक और मोर्चा बना लिया। 1933 और 1937 में किए गए उनके भूख हड़तालों ने न केवल जेल प्रशासन को झुकने पर मजबूर किया, बल्कि पूरे देश का ध्यान क्रांतिकारी कैदियों की दशा की ओर आकर्षित किया। भगत सिंह ने अपने एक पत्र में दत्त के इस साहस की सराहना करते हुए लिखा था कि क्रांतिकारी केवल मरते ही नहीं, बल्कि जीवित रहकर भी लड़ते हैं—और दत्त ने इसे अपने कठोर जीवन से सिद्ध कर दिखाया। आज़ादी के निकट आते-आते दत्त की भूमिका कम नहीं हुई। 1938 की अस्थायी रिहाई के बाद भी वे लगातार आंदोलन से जुड़े रहे। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में पुनः गिरफ्तार किए गए, और एक बार फिर उन्हें ब्रिटिश यातनाओं का सामना करना पड़ा।

किंतु स्वतंत्रता के बाद उनकी सबसे त्रासद कहानी शुरू होती है—वह कहानी, जिसमें एक महान क्रांतिकारी को अपने ही देश में उपेक्षित रहना पड़ा। आज़ाद भारत में बटुकेश्वर दत्त को न सम्मान मिला, न आर्थिक सुरक्षा। जीवनयापन के लिए उन्हें सिगरेट एजेंट, टूरिस्ट गाइड जैसी नौकरियाँ करनी पड़ीं। उनका परिवार आर्थिक संघर्षों से जूझता रहा, और वे स्वयं बीमारियों और उपेक्षा के बीच धीरे-धीरे टूटते गए। यह विडंबना केवल एक व्यक्ति की कहानी नहीं, बल्कि स्वतंत्रता के इतिहास का वेदनापूर्ण अध्याय है, जहाँ कई क्रांतिकारी अपनी योग्यताओं के अनुरूप मान्यता से वंचित रह गए। 20 जुलाई 1965 को बटुकेश्वर दत्त ने अंतिम सांस ली। उनकी अंतिम इच्छा थी कि उनकी अस्थियाँ हुसैनीवाला में भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु की समाधियों के पास विसर्जित की जाएँ—यह सिर्फ एक इच्छा नहीं थी, बल्कि उन आदर्शों के प्रति उनकी अमर प्रतिबद्धता का प्रतीक थी, जिन्होंने उनके जीवन को अर्थ दिया। आज बटुकेश्वर दत्त का जीवन हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हमने उनकी विरासत को उतनी गंभीरता से संभाला है, जितनी वह हकदार है? उनका जीवन बताता है कि आज़ादी का अर्थ केवल बाहरी नियंत्रण से मुक्ति नहीं, बल्कि न्याय, समानता और मानवीय गरिमा की निरंतर खोज है। दत्त की कहानी एक चेतावनी भी है और प्रेरणा भी—चेतावनी इस बात की कि किसी राष्ट्र को अपने नायकों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए; प्रेरणा इस सत्य की कि साहस, त्याग और विचारों की शक्ति इतिहास को बदल सकती है। जब हम 18 नवम्बर को उनका जन्मदिन याद करते हैं, तो यह केवल स्मरण नहीं होना चाहिए, बल्कि एक संकल्प होना चाहिए कि हम उन मूल्यों को जीवित रखें, जिनके लिए बटुकेश्वर दत्त ने अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया।

महेन्द्र तिवारी

वायरल या विकृत मानसिकता : 'शोले' के वीरू धर्मेन्द्र की झूठी मौत और हमारी मरती संवेदनाएं

कुछ दिन पहले सोशल मीडिया पर खबर फैली कि बॉलीवुड के दिग्गज धर्मेन्द्र नहीं रहे। कुछ टीवी चैनलों, यूट्यूब चैनलों और फेसबुक पेजों ने इसे इस तरह प्रस्तुत किया मानो सिनेमा का एक युग सचमुच समाप्त हो गया हो। कुछ ही घंटों में यह खबर वायरल हुई। लोगों ने श्रद्धांजलि संदेश लिखने शुरू कर दिए और फिर, सच्चाई सामने आई - 'शोले' के वीरू धर्मेन्द्र जीवित हैं, स्वस्थ हैं, मुस्करा रहे हैं। यह खबर झूठी थी और उससे कहीं बड़ी सच्चाई यह है कि हमारी संवेदनाएं अब इतनी कमजोर पड़ गई हैं कि किसी की 'मौत की झूठ' भी हमें मनोरंजन लगने लगती है। धर्मेन्द्र केवल एक अभिनेता नहीं हैं बल्कि भारतीय सिनेमा का वह जीवंत अध्याय हैं जिसने दशकों तक दर्शकों के दिलों में प्रेम, संघर्ष और जीवन का जज्बा भरा। 'शोले' के वीरू से लेकर 'सत्यकाम' के आदर्शवादी नायक तक, उन्होंने परदे पर हर रूप में इंसानियत का संदेश दिया। ऐसे व्यक्ति के बारे में झूठी मृत्यु की खबर फैलाना केवल गैर-जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक गहरी नैतिक गिरावट का संकेत है। सवाल यह है कि यह सब क्यों और कैसे हो रहा है? क्या हमारे भीतर से संवेदना का वह हिस्सा मर चुका है जो किसी और के दुःख को महसूस कर सके? यह कोई पहली बार नहीं है जब किसी बड़े अभिनेता या प्रसिद्ध व्यक्ति की 'मौत की खबर' सोशल मीडिया पर उड़ाई गई हो। कभी अमिताभ बच्चन, कभी लता मंगेशकर, तो कभी रजनीकांत आदि के बारे में भी ऐसी ही फर्जी खबरें फैल चुकी हैं। सवाल यह है कि आखिर कोई व्यक्ति या मीडिया प्लेटफॉर्म ऐसी खबरें फैलाता क्यों है? आज का डिजिटल समाज सूचनाओं से भरा हुआ है, लेकिन सत्य से खाली होता जा रहा है। खबरें अब खबर नहीं, 'कंटेंट' बन गई हैं। सोशल मीडिया पर हर कोई पत्रकार है पर किसी पर जवाबदेही नहीं। एक फर्जी पोस्ट, एक सनसनीखेज थंबनेल और कुछ आकर्षक शब्द, बस, अफवाह तैयार - क्लिकों की फसल काटने के लिए। फिर चाहे किसी का करियर बर्बाद हो, किसी परिवार पर वज्रपात हो या किसी बुजुर्ग कलाकार के मन पर गहरी चोट। सब चलता है, क्योंकि 'व्यूज' और 'क्लिक्स' ही अब सत्य के नए पैमाने हैं। धर्मेन्द्र के नाम पर यह अफवाह उसी प्रवृत्ति का परिणाम है जहां खबरों की जगह सनसनी ने ले ली है। क्या हमें इतना असंवेदनशील बना दिया गया है कि किसी की मृत्यु भी अब 'वायरल अवसर' बन जाए? सोशल मीडिया पर कुछ लोगों ने इस झूठी खबर को मजाक में लिया, मीम बनाए और अपनी 'क्रिएटिविटी' का प्रदर्शन किया। पर क्या किसी की मृत्यु पर मजाक किया जा सकता है? यह प्रश्न केवल धर्मेन्द्र के लिए नहीं बल्कि पूरे समाज के लिए है। क्या हम उस बिन्दु पर पहुंच चुके हैं जहां संवेदना भी लाइक और शेयर के नीचे दब गई है? कानून तो कहता है कि

झूठी खबर फैलाना अपराध है। सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम में इसके लिए सजा का प्रावधान है, पर कार्रवाई कितनी होती है? सोशल मीडिया कंपनियां कितनी गंभीर हैं? सच्चाई यह है कि झूठ की गति सच्चाई से कहीं ज्यादा तेज है।

जब तक झूठ फैलाने वालों को लाभ मिलता रहेगा और समाज उसे 'मनोरंजन' के रूप में स्वीकार करता रहेगा, तब तक इस बीमारी का कोई इलाज संभव नहीं। यह समय है कि नई पीढ़ी, खासकर जनरेशन- ', इस सवाल को गंभीरता से ले। उनके पास सूचना की अपार शक्ति है, लेकिन क्या उतनी ही समझ भी है? वे हर खबर तक सबसे पहले पहुंचते हैं परंतु क्या हर खबर को परखते भी हैं? सूचना साझा करने से पहले यदि थोड़ी जांच, थोड़ी जिम्मेदारी दिखाई जाए, तो समाज में बहुत कुछ सुधर सकता है। सच बोलने की ताकत वही पीढ़ी दिखा सकती है जो तकनीक की भाषा सबसे बेहतर समझती है। धर्मेन्द्र आज भी हमारे बीच हैं, जीवन से भरे, मुस्कराते हुए। उनकी सादगी और आत्मीयता आज की कृत्रिम दुनिया में दुर्लभ है। उनके नाम पर फैली झूठी खबर ने न केवल एक कलाकार को आहत किया है, बल्कि हमारे समाज के भीतर झांकने का अवसर भी दिया है। यह घटना हमें आईना दिखाती है कि डिजिटल युग की चकाचौंध में हमने सच्चाई और संवेदना को कितना पीछे छोड़ दिया है। अब प्रश्न यह नहीं कि झूठी खबर किसने फैलाई, बल्कि यह है कि हमने उसे फैलने क्यों दिया। धर्मेन्द्र की झूठी मौत की अफवाह दरअसल हमारी जीवित चेतना की असली परीक्षा थी और शायद हम असफल हुए। आवश्यक है कि हम इस प्रवृत्ति का प्रतिकार करें, न कि उसका हिस्सा बनें। खबरें साझा करने से पहले ठहरें, सोचें, जांचें। सच को ट्रेंड बनाइए, झूठ को नहीं। सच को सम्मान देना ही धर्मेन्द्र जैसी जीवित किंवदंतियों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी और शायद तब हम यह कह पाने की स्थिति में होंगे कि हम केवल डिजिटल नहीं, संवेदनशील समाज भी हैं।

कृष्ण कुमार

संपादकीय

भगत सिंह की छाया नहीं—एक अलग आकाश थे बटुकेश्वर दत्त

बम का धुआँ नहीं, विचारों की चिंगारी थे बटुकेश्वर दत्त

बटुकेश्वर दत्तः वो लौ, जो भगत सिंह के बराबर जलती रही

वह लड़का, जिसे इतिहास ने अक्सर भगत सिंह की छाया में याद किया, असल में खुद एक ऐसी लौ था जो किसी भी आँधी में नहीं बुझती थी—बटुकेश्वर दत्त। वो शख्स, जिसने अपनी जवानी की हर सांस, हर धड़कन, देश की मिट्टी के नाम कर दी। उसका जीवन सिर्फ एक क्रांतिकारी की दास्तान नहीं, बल्कि उस जिद का प्रतीक है जो कहती है— 'अन्याय का जवाब सिर्फ आवाज़ से नहीं, साहस से दिया जाता है।' आज, उनकी जयंती पर, हम सिर्फ़ एक क्रांतिकारी को याद नहीं करते, बल्कि उस आग को सलाम करते हैं, जो अंग्रेजी हुकूमत की नींव हिला गई। बटुकेश्वर दत्त कोई मिथक नहीं थे, न ही कोई काल्पनिक नायक; बल्कि हाड़-मांस का वह साहसी युवक था, जिसने 18 साल की उम्र में अपने सपनों और भविष्य को देश के लिए समर्पित कर दिया। उनके भीतर बचपन से ही वह आग थी जो किसी निजी बदले की नहीं, बल्कि गुलामी को तोड़ने की थी। अन्याय और अत्याचार को देखकर जहाँ अधिकांश लोग चुप हो जाते हैं, दत्त ने क्रांति का रास्ता चुना—सबसे कठिन, सबसे जोखिम भरा, पर सबसे सच्चा। जिस उम्र में लोग अपने सपनों की नींव रखते हैं, दत्त ने अपने जीवन को देश के नाम अर्पित करने का संकल्प लिया—विनाश के लिए नहीं, बल्कि भारत के निर्माण के लिए। 1929 की वो अप्रैल की तारीख, जब दिल्ली की सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली में धमाके की गूंज उठी। बम फटा, धुआं छाया, और अंग्रेजी सत्ता के कान खड़े हो गए। लेकिन ये धमाका सिर्फ़ बारूद का नहीं था; ये था एक नौजवान के दिल का फटना, जो गुलामी की बेड़ियों को देखकर तड़प रहा था। बटुकेश्वर दत्त ने, अपने साथी भगत सिंह के साथ मिलकर, उस बम को फेंका, जो न हत्या के लिए था, न विनाश के लिए। वो बम था एक चेतावनी, एक हुंकार, एक संदेश–'इंकलाब ज़िंदाबाद!'। उन्होंने जानबूझकर ऐसी जगह बम फेंका, जहां कोई जान न जाए। क्योंकि उनकी लड़ाई हथियारों से नहीं, विचारों से थी। वो चाहते थे कि अंग्रेज़ सुनें, कि भारत की आत्मा की आवाज़ दुनिया तक पहुंचे। और वो आवाज़ पहुंची भी। लेकिन इस शौर्य की कीमत क्या थी? आज हम उनके नाम पर गर्व करते हैं, पर उस वक्त? कालापानी की सजा, अंडमान की जेल की अंधेरी कोठरियां, जहां सूरज की किरण भी दम तोड़ देती थी। बटुकेश्वर ने वो सब सहा। न उनके चेहरे पर शिकन आई, न दिल में पछतावा। जेल की दीवारों पर उनकी उंगलियों ने आज़ादी के गीत लिखे। वो गीत, जो आज भी हमारे भीतर कहीं न कहीं गूंजते हैं। क्या हमने कभी सोचा, कितनी हिम्मत चाहिए होती है, अपने परिवार को, अपने सपनों को, अपने जीवन को, सिर्फ़ एक उम्मीद के लिए कुर्बान कर देने में? बटुकेश्वर ने किया। और यही उनकी जयंती को इतना खास बनाता है। बटुकेश्वर दत्त सिर्फ़ एक क्रांतिकारी नहीं थे, वो एक विचार थे। वो उस पीढ़ी के प्रतीक थे, जिसने गुलामी को नकार दिया। उनकी ज़िंदगी का हर पल हमें सिखाता है कि आज़ादी कोई सौदा नहीं, कोई उपहार नहीं। आज़ादी वो आग है, जिसे हर पीढ़ी को जलाए रखना पड़ता है। आज, जब हम उनकी जयंती मना रहे हैं, क्या हम सचमुच उनकी विरासत को समझते हैं? क्या हम उस आग को अपने भीतर महसूस करते हैं? बटुकेश्वर की कहानी हमें झकझोरती है, हमें याद दिलाती है कि आज़ादी की लड़ाई कभी खत्म नहीं होती। वो रूप बदलती है, लेकिन उसका मोल वही रहता है। उनका जीवन सिर्फ़ बम और बारूद तक सीमित नहीं था। जेल से निकलने के बाद भी, उन्होंने समाज के लिए काम किया। लेकिन दुख की बात, देश ने उन्हें उतना सम्मान नहीं दिया, जितना वो हकदार थे। बटुकेश्वर दत्त की आखिरी सांसें दिल्ली एक अस्पताल में टूटीं, 1965 में, और तब तक देश का बड़ा हिस्सा उन्हें भूल चुका था। ये हमारे लिए शर्मिंदगी की बात है। पर उनकी जयंती हमें मौका देती है—खुद को सुधारने का, उनकी कुर्बानी को सच्चे मन से याद करने का, और उनके सपनों को ज़िंदा रखने का। आज, जब हम बटुकेश्वर दत्त को याद करते हैं, तो ये सिर्फ़ एक दिन नहीं, एक जिम्मेदारी है। उनकी आंखों में जो भारत का सपना था, उसे साकार करने की जिम्मेदारी। वो सपना, जहां कोई भूखा न सोए, कोई गुलाम न रहे, कोई डर न जीए। क्या हम उस सपने के करीब हैं? या हमने उनकी कुर्बानी को सिर्फ़ किताबों और भाषणों तक सीमित कर दिया? उनकी जयंती हमें ये सवाल पूछने को मजबूर करती है। और जवाब हमारी ज़िंदगी में, हमारे कर्मों में छिपा है। बटुकेश्वर दत्त की कहानी कोई पुरानी कथा नहीं। वो आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। जब हम अन्याय देखते हैं, जब हम गलत के खिलाफ आवाज़ उठाने से डरते हैं, तब हमें बटुकेश्वर की वो हिम्मत याद करनी चाहिए। वो हिम्मत, जिसने अंग्रेजी सत्ता को चुनौती दी। वो जज़्बा, जिसने जेल की सलाखों को भी गीत बना दिया। उनकी जयंती हमें वो आग देती है, वो ताकत देती है, जो हमें अपने भीतर के डर को जलाने के लिए चाहिए। उनकी जयंती पर जब हम उन्हें याद करते हैं, तो यह याद मात्र औपचारिकता नहीं होनी चाहिए। यह वह क्षण है जब हमें खुद से पूछना चाहिए—क्या हम उन बलिदानों को सिर्फ पाठ्यपुस्तकों की लाइनों तक सीमित कर सकते हैं? क्या बटुकेश्वर दत्त जैसे क्रांतिकारी सिर्फ एक नाम रह जाएँ? या हम उनके विचारों की आग को अपने भीतर जगा सकते हैं—अन्याय के खिलाफ खड़े होने की हिम्मत, सच बोलने का साहस और देश से प्रेम की वह भावना जो किसी स्वार्थ की मोहताज नहीं? बटुकेश्वर दत्त हमें यह सिखाते हैं कि आज़ादी सिर्फ सीमा पर नहीं बचती, वह हर उस जगह बचती है जहाँ कोई अन्याय के सामने सिर झुकाने से इंकार करता है। वह हमें बताते हैं कि देशभक्ति तिरंगे की शान में खड़े होने तक सीमित नहीं, बल्कि उस हर सत्य को बचाने में है जो समाज को इंसानियत से जोड़ता है। आज उनका नाम जितनी बार लिया जाए, उतनी ही बार यह एहसास होना चाहिए कि वह सिर्फ इतिहास के पात्र नहीं—वह वर्तमान को जीवंत रखने वाला वह दीपक हैं जिसे अगर जला दिया जाए, तो अंधेरा कभी स्थायी नहीं रह सकता।

उनकी जयंती पर उन्हें नमन करना जितना जरूरी है, उतना ही जरूरी है उनके दिखाए रास्ते को समझना—निडरता का रास्ता, सत्य का रास्ता, और उस देशप्रेम का रास्ता जो खुद से पहले देश को रखता है। बटुकेश्वर दत्त भले शरीर से मिट गए हों, पर उनका साहस और उनका विद्रोही प्रकाश आज भी उतना ही ज्वलंत है। और शायद यही उनकी सबसे बड़ी विरासत है—एक ऐसी विरासत जिसे न कोई सलाखें कैद कर सकती हैं, न कोई समय मिटा सकता है। बटुकेश्वर दत्त को सलाम करें, न सिर्फ़ शब्दों से, बल्कि अपने कर्मों से। उनके सपने को, उनके इंकलाब को, अपने जीवन का हिस्सा बनाएं। क्योंकि बटुकेश्वर दत्त कोई नाम नहीं, एक आंदोलन हैं। और ये आंदोलन तब तक ज़िंदा रहेगा, जब तक हमारे दिलों में आज़ादी की धड़कन बाकी है। इंकलाब ज़िंदाबाद।

प्रो. आरके जैन

ढाका में सुनवाई के दौरान बंग्लादेश कोर्ट ने शेख हसीना को लोगो की हत्या का दोषी माना

शेख हसीना, जो लंबे समय से बांग्लादेश की राजनीतिक हीरोइन और सत्ता में रहने वाली प्रधानमंत्री रही हैं, अब गंभीर आरोपों का सामना कर रही हैं। अभियोजकों के अनुसार, 2024 के बड़े छात्र-प्रदर्शनों के दौरान उनकी सरकार ने हिंसा भड़काने और मानवता के ख़िलाफ अपराध करने में भूमिका निभाई।

संगठित, सुनियोजित हमला

अभियोजकों का दावा है कि प्रदर्शनवाद एक सिस्टमैटिक अटैक था ।हसीना ने पुलिस, सुरक्षा बलों और अपने समर्थक पार्टी कार्यकर्ताओं को इस्तेमाल किया ताकि विद्रोह को दबाया जाए। गोलियों और घातक हथियारों का आदेश का भी आरोप है।एक लीक हुई ऑडियो कॉल में, हसीना कथित तौर पर कहती हैं कि उन्होंने घातक हथियारो के इस्तेमाल का आदेश दिया और कहा, जहां भी उन्हें मिलें, गोली मार दो। हेलीकॉप्टर और ड्रोन का इस्तेमाल और अभियोजक यह आरोप लगा रहे हैं कि हसीना के निर्देश पर प्रदर्शनकारियों पर लड़ाकू कार्रवाई के लिए हेलीकॉप्टर और ड्रोन का इस्तेमाल किया गया। निर्दिष्ट हत्याएँ विशेष रूप से, एक छात्र प्रदर्शनकारी अबू सैयद की हत्या का आरोप है।वह 16 जुलाई, 2024 को रंगपुर में करीब से गोली मारे जाने का शिकार बनाए गए थे, और अभियोजन पक्ष का कहना है कि यह आदेश हसीना की सरकार की नीति का हिस्सा था। मानवता के खिलाफ अपराध शामिल है।अभियोजन ने पांच गंभीर आरोप लगाए हैं। उनमें साजिश, प्रोत्साहन सहायता-सहभागिता ,व्यवस्थित हत्या में विफलता आदि शामिल हैं। एक्सटरमिनेशन (नाश) का आरोप और कुछ रिपोर्ट्स में कहा गया है कि प्रदर्शनकारियों के संहार की योजना थी, यानी यह सिर्फ दमन नहीं, बल्कि व्यापक पैमाने पर नष्ट करने का इरादा था।

ट्रायल और कोर्ट की भूमिका

बांग्लादेश का इंटरनेशनल क्राइम्स ट्रिब्यूनल इस मामले की सुनवाई की गई। अभियोजन पक्ष के चीफ वकील मोहम्मद ताजुल इस्लाम ने कहा है कि सबूतों की जांच के बाद यह निष्कर्ष निकला है कि ये हमले विस्थापित, व्यापक और सुनियोजित थे। हसीना की अनुपस्थिति में ट्रायल चल रहा है और वह भारत में है और प्रवासन में हैं। अभियोजन पक्ष ने मृत्युदंड की मांग की और उन्हें सजा भी सुनाई है। यह कहकर कि इन कार्रवाइयों को अ-संगठित नागरिकों के खिलाफ संगठित आपराधिक अपराध माना जाना चाहिए। वहीं, हसीना और उनके वकील इस ट्रायल को राजनीतिक प्रेरित बता रहे हैं।

रिपोर्ट्स कहती हैं कि ट्रायल लाइव हो रहा है, लोगों को प्रक्रिया की पारदर्शिता देने का प्रयास किया जा रहा है।

हसीना का प्रतिवाद और इनकार

हसीना ने आरोपों को खारिज किया है और कहा है कि ये पूरी तरह गलत और राजनैतिक प्रेरित हैं। उन्होंने पूर्व में कहा है।मुझे मुकदमा चलाओ, मुझे फर्क नहीं पड़ता।मैं वापस आऊँगी।अपनी प्रतिरक्षा में, वह भारत सरकार और जनता का शुक्रिया अदा किया है, यह कहकर कि भारत ने उन्हें संरक्षण दिया है। हसीना की ओर से यह तर्क है कि ट्रिब्यूनल, जिसे उन्होंने पहले ही स्थापित किया था, अब उनके खिलाफ इस्तेमाल किया जा रहा है।इसका मतलब अगर उसकी भविष्य की दशा-परिस्थिति देखें, तो हसिनके लिये चुनौतियाँ है। ट्रायल में आरोप में दोषी ठहने के दो केस की सुनवाई मृत्युदंड की सजा दी हैं। न्याय प्रक्रिया की निष्पक्षता पर अंतरराष्ट्रीय निगरानी रहेगी और यह महत्वपूर्ण होगा कि ट्रायल न्यायसंगत हो, क्योंकि यह सिर्फ बांग्लादेश के लिए नहीं, बल्कि वैश्विक मानवाधिकार मानकों के लिहाज़ से भी महत्वपूर्ण है। उनका रूढ़-राजनीतिक समर्थन अभी भी कितना है? क्या उनके पुराने समर्थक (Awami League) उन्हें छोड़ देंगे, या वे उनकी रक्षा करेंगे?हसीना को दोषी ठहरायी गई है। अब वह राजनैतिक मे कैसे लौट सकती हैं?अब राजनीतिक भविष्य धूमिल हो जाएगा? क्या वह भारत में शरणदाता के रूप में रहने की स्थिति बनाए रखेंगी, या किसी राजनीतिक समझौते के हिस्से के रूप में बांग्लादेश लौटने का निर्णय लेंगी?

नैतिक और सामाजिक परीक्षा

जनता की आंखों में उनकी छवि कैसी है? नायिका, दमनकारी, या दोषी?परिवारों और पीड़ितों के प्रति जिम्मेदारी और पुनर्स्थापनात्मक न्याय की मांग पर कैसे प्रतिक्रिया देंगी?यह परीक्षण होगा कि वह सिर्फ शक्ति की राजनीति में वापस आना चाहेंगी, या अपराधों के लिए जवाबदेही स्वीकार करेंगी।राजनीतिक दिवालियापन या पुनरागमन? ट्रायल में उन्हें दोषी पाया गया है।तो उनका राजनीतिक औद्योगिककरण बंद हो सकता है यह उनका पुनरागमन बहुत मुश्किल बना देगा।लेकिन यह पूरी तरह निर्भर करेगा ट्रायल की निष्पक्षता और जनता के दृष्टिकोण पर।

भारत-बांग्लादेश रिश्तों पर परीक्षा

भारत के लिए यह परीक्षण है कि वह हसीना को समर्थन देते हुए अपने बाहरी संबंधों और कानून-न्याय नीति को कैसे संतुलित करेगा।बांग्लादेश की वर्तमान सरकार और अंतरिम प्रशासन के साथ भारत की नीतिगत स्थिति कैसे विकसित होगी ।क्या भारत हसीना की वापसी को अनुमति देगा, या ट्रायल में हस्तक्षेप करेगा?अंतरराष्ट्रीय दबाव मानवाधिकार संगठन, पड़ोसी देश कैसे बिकेगा, और इनका भारत-बांग्लादेश संबंधों पर दीर्घकालीन असर क्या होगा?

भारत-बांग्लादेश रिश्ते पर असर

हसीना की यह स्थिति और ट्रायल न सिर्फ बांग्लादेश के अंदरूनी राजनीति को प्रभावित कर रही है, बल्कि भारत-बांग्लादेश के रिश्तों पर भी गहरा प्रभाव डाल सकती है।

शरण और प्रत्यर्पण मुद्दा हसीना फिलहाल भारत में हैं। भारत को यह तय करना होगा कि क्या वह उन्हें प्रत्यर्पित करने की मांग को स्वीकार करेगा या नहीं। अगर भारत उन्हें प्रत्यर्पित नहीं करता, तो यह एक राजनीतिक तनाव का स्रोत बन सकता है।राजनीतिक गठबंधन और समर्थन अगर हसीना को दो केस में सजा सुनाई है और अगर तीन केस में सीना को दोषी ठहराया जाय तो मुश्किल होगी। अगर सबूत के अभाव के बड़ी7 कर दिया जाए तो वह फिर से राजनीतिक रूप से सक्रिय हो सकती हैं और भारत-बांग्लादेश के रणनीतिक तालमेल में वह फिर एक कारक बनेंगी। अगर दोषी पायी जाती हैं,इसलिए भारत को उनकी वापसी का समर्थन देना मुश्किल हो गया है। अंतरराष्ट्रीय छवि और मानवीय दबाव विरोध पैदा करता है। भारत एक लोकतांत्रिक देश के रूप में अपनी छवि बनाए रखना चाहता है। यदि वह हसीना को खुलकर समर्थन करता है, तो यह मानवाधिकार समूहों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय में आलोचना का कारण बन सकता है। दूसरी ओर, हसीना का प्रत्यर्पण या ट्रायल में दोषसिद्धि भारत की न्याय-और कूटनीति क्षमता की कसौटी बन सकती है।

कांतिलाल मांडोत

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक रवि कुमार अवस्थी द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला विजय लक्ष्मी नगर परगना खैराबाद तहसील व जनपद -सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, हीवेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में छपे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोटः**–उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादो का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.N.I NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0 -9511151254,E-Mail :- news@swatantraprabhat .com

संक्षिप्त खबरें

वीरेंद्र शुक्ला बने कर्मचारी संगठन के अध्यक्ष

डॉ. शालिनी साहू को मिली मंत्री की जिम्मेदारी।

लालगंज (रायबरेली)। बैसवारा इंटर कॉलेज में सोमवार को कर्मचारी संगठन की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। इसमें वीरेंद्र कुमार शुक्ला को अध्यक्ष और सर्वसम्मति से डॉ. शालिनी साहू को मंत्री चुना गया। अध्यक्ष चुने जाने के बाद वीरेंद्र शुक्ला ने कहा कि संगठन की मजबूती सभी की एकजुटता से ही आती है। उन्होंने सभी कर्मचारियों से साथ मिलकर काम करने की अपील की। मंत्री डॉ. शालिनी साहू ने कहा कि वह अपने दायित्व का ईमानदारी से निर्वहन करेंगी और कर्मचारियों के हितों की बात आगे रखेंगी।चुनाव के बाद शिक्षकों ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का फूल मालाओं से स्वागत किया। बैठक में यह भी तय हुआ कि 8 दिसंबर 2025 को सेवानिवृत्त शिक्षकों और कर्मचारियों का सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा। इसमें सभी शिक्षक और शिक्षणेत्तर कर्मचारी सहयोग करेंगे। प्रधानाचार्य डॉ. नरेंद्र बहादुर सिंह ने नए पदाधिकारियों को शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में राजेंद्र राठौर, रणधीर सिंह, भवानी प्रसाद श्रीवास्तव, विनोद सिंह, उदय विक्रम सिंह, सुनील त्रिपाठी, रामजीलाल श्रीवास्तव, सोमेश सिंह, सीमा, सपना सिंह, प्रियांशी, रीता, बृजेश शर्मा सहित सभी शिक्षक व शिक्षणेत्तर कर्मचारी मौजूद रहे।

गाली गलौज कर रहे युवक का विरोध करने पर युवक ने महिला पर कुल्हाड़ी से किया हमला केस दर्ज

महराजगंज/रायबरेली। नशे की हालत में गाली गलौज कर रहे युवक का विरोध करने पर युवक ने महिला पर कुल्हाड़ी से हमला कर घायल कर दिया। महिला के पिता की तहरीर पर पुलिस ने शनिवार को युवक के खिलाफ एससी एसटी सहित कई गंभीर धाराओं में केस दर्ज कर कार्यवाही में जुट गई है। घटना कोतवाली क्षेत्र के ओनई जंगल गांव की है। चंदापर थाना क्षेत्र के जनई गांव नवासी राम स्वरूप ने पुलिस को दी गई तहरीर में बताया कि शुक्रवार की शाम करीब साढे आठ बजे उसकी बेटी ओनई जंगल गांव में अपने घर पर मौजद थी, तभी गांव के पप्पू पुत्र रामकमार ने पुरानी रंजिश को लेकर नशे की हालत में गाली गलौज शुरू कर दी। उसकी बेटी के विरोध करने पर आरोपी ने पास में पड़ी कुल्हाड़ी से हमला कर दिया, जिससे उसे कापी चोटें आई, शोरगुल सुनकर गांव वालों को आता देख आरोपी जान से मारने की धमकी देते हए मौके से भाग गया । एबुलंस की मदद से घायल बेटी को सीएचसी पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद उसकी बेटी की हालत गंभीर बताते हए जिला अस्पताल रेफर कर दिया। जहां उसक इलाज अभी भी चल रहा है। मामले में कोतवाल जगदीश यादव ने बताया कि घायल महिला के पिता की तहरीर पर एससी एसटी सहित अन्य संबंधित गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया गया है। कायवाही की जाएगी।

जम्मू तवी एक्सप्रेस की चपेट में आने से युवक की मौत रेलवे लाइन हुई बाधित

मलिहाबाद। सोमवार की शाम एक दर्दनाक हादसा हुआ जब एक 20 वर्षीय युवक जम्मू तवी एक्सप्रेस की चपेट में आ गया जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई लगभग एक घंटे यातायात प्रभावित रहा। घटना मलिहाबाद रेलवे स्टेशन से महमूदनगर ढाल के बीच पोल संख्या 94/30 पर हुई।

घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची। पुलिस ने मृतक का शव ट्रेन में बुरी तरह फंसा हुआ था। रेलवे लाइन को तुरंत क्लियर करने और शव को निकालने के लिए पुलिस ने आसपास के ग्रामीणों की मदद ली। काफी मशक्कत के बाद शव को बाहर निकाला जा सका जिसके बाद रेलवे लाइन को यातायात के लिए साफ किया गया।मौके पर मौजूद ग्रामीणों ने मृतक की पहचान विकास कुमार 20 निवासी पाठकगंज, महमूदनगर के रूप में हुई। घटना स्थल पर मृतक के पिता रामगोपाल और ग्राम प्रधान सर्वेश कुमार भी मौजूद पाए गए। पुलिस ने बताया कि उन्होंने घटना स्थल का निरीक्षण कर आवश्यक कार्रवाई पूरी कर ली है और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है कि यह दुर्घटना थी या कोई अन्य कारण।

सीतापुर में जेठ ने बहू की रेती गर्दन, बांके से किया ताबड़तोड़ हमला; चारा काटने को लेकर हुआ विवाद

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर जनपद सीतापुर में सोमवार सुबह महिला और जेठ में चारा काटने को लेकर विवाद हुआ। जिससे गुस्से में आए महिला के जेठ ने बांका से गला रेतकर हत्या कर दी। जिससे महिला गंभीर हालत में जमीन पर गिर पड़ी। वहीं अंजलि की मौके पर ही मौत हो गई वहीं हत्या के बाद आरोपी मौके से फरार हो गया। घटना रामपुर मथुरा थाना क्षेत्र के तुतहीपुर गांव का है। वहीं अंजलि और जेठ जगतराम में जमीन को लेकर अक्सर विवाद होता था। अंजलि के नाम पर 16 बीघा जमीन थी। जो पति की मौत के बाद इकलौती बेटी के साथ ससुराल में ही रहती थी जिसको लेकर जेठ अक्सर जमीन को लेकर मारपीट करता था दरअसल सोमवार सुबह तुतहीपुर गांव में अंजलि (35) पत्नी स्वर्गीय पलटूराम घर पर मशीन से चारा काट रही थी इसी दौरान उसके जेठ जगतराम के साथ चारा काटने को लेकर कहासुनी हो गई। इस दौरान जेठ ने पास में रखा बांका उठाकर गला रेत दिया। जिससे अंजलि जमीन पर गिरकर तड़पने लगी। जिसकी 5 मिनट बाद मौत हो गई चीख सुनकर पहुंचे ग्रामीणों ने अंजलि को खून से लथपथ पड़ा देखा, जबकि आरोपी भाग चुका था। ग्रामीणों ने घटना की सूचना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस और फॉरेंसिक टीम जांच पड़ताल कर शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। अंजलि के नाम 16 बीघा जमीन थी। अंजलि की एक 6 साल की बेटी रोशनी है। वहीं अंजलि के पति की 2 साल पहले मौत हो गई थी जिसके बाद से महिला और जेठ का परिवार गांव में अलग-अलग रहते है। जेठ जगतराम की पत्नी भी करीब 10 साल पहले मौत हो गई थी आरोपी जेठ को 2 बेटी और दो बेटे है। जिसमें 2 बेटियों की शादी हो चुकी है। बेटे संदीप (22), छोटू (18) पर ही रहकर खेती का काम करते है ग्रामीणों का कहना है कि चारा मशीन को लेकर परिवार में पहले भी विवाद होते रहते थे। अंजलि के पति पलटूराम की कुछ साल पहले मौत हो गई थी। जिसके बाद से अंजलि गांव में ही रहती थी। जेठ-जिठानी में पिछले कई दिनों से तनाव चल रहा था। सोमवार को मशीन में चारा काटने की बात को लेकर विवाद ज्यादा हो गया। जिससे जेठ ने गुस्से में आकर बांका से वार कर बहू का गला रेत दिया। दोनों के बीच कई दिनों से तनाव चल रहा था। जो सोमवार को चारा काटने की बात पर खूनी संघर्ष में बदल गया ग्रामीण रामकुमार ने बताया कि जमीन हड़पने के लिए जेठ ने हत्या की है। घटना के समय महिला घर में चाय बना रही थी। उसी दौरान जेठ जगतराम ने बांके से हमला कर दिया। उसकी मौत हो गई। महिला के पति की करीब 2 साल पहले मौत हो गई थी। हमले के दौरान चीख पुकार सुनकर हम लोग पहुंचे तो जगतराम भाग गया। थानाध्यक्ष ने बताया कि आरोपी जेठ की तलाश में पुलिस की टीमें दबिश दे रही हैं। तहरीर के आधार पर हत्या का मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। प्राथमिक जांच में मामला घरेलू विवाद से जुड़ा प्रतीत हो रहा है। एएसपी दक्षिणी दुर्गेश सिंह का कहना है कि चारा मशीन पर चारा काटने को लेकर विवाद हुआ था। जिसके बाद जगतराम ने अंजलि पर हमला कर मौत के घाट उतार दिया। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। आरोपी की तलाश के लिए पुलिस लगी है। तहरीर के आधार पर आवश्यक विधिक कार्रवाई की जाएगी!!

पैदल जा रहें युवक को बाइक सवार ने मारी टक्कर, मौत

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के सातनपुर गांव में रविवार दोपहर हुए सड़क हादसे में एक युवक की मौत हो गई। गांव के रहने वाले हरिशंकर शुक्ला (45) अपने भाई को खाना देने के लिए पैदल सड़क किनारे जा रहे थे। इसी दौरान तेज रफ्तार बाइक सवार ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दी। इससे वे गंभीर रूप से घायल होकर सड़क पर गिर पड़े।घटना के बाद मौके पर मौजूद लोगों ने उन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने हालत नाजुक देखते हुए उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया। परिजन जब उन्हें जिला अस्पताल लेकर जा रहे थे तभी रास्ते में ही उनकी मौत हो गई। मृतक दिल्ली में एक कपड़े की दुकान पर काम करते थे। कुछ दिनों पहले ही अपने गांव आए थे। वे अविवाहित थे। परिवार में छह भाइयों में दूसरे नंबर पर थे। हादसे के बाद परिवार में मातम पसर गया। बड़े भाई राम शंकर छोटे भाई करुणा शंकर, रजोले, राम प्रकाश, सधोले सहित परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया।

सुंदरकांड और राज्याभिषेक प्रसंग ने भावविभोर किए श्रोता

● सात दिवसीय मानस मंदाकिनी श्रीराम कथा का समापन।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज (रायबरेली)। कस्बे के नई बाजार मोहल्ला स्थित श्री संस्कृत विद्यालय परिसर में चल रही सात दिवसीय संगीतमय मानस मंदाकिनी श्री राम कथा का सोमवार को समापन हुआ। अंतिम दिन कथा व्यास नीशू भारद्वाज गोपी जी ने सुंदरकांड, लंका विजय और श्रीराम राज्याभिषेक का मनोहारी प्रसंग सुनाया। कथा सुनकर मौजूद श्रोता भावविभोर हो गए। कथा व्यास ने कहा कि गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना स्वान्तः सुखाय की थी। उन्होंने बताया कि बालकांड निर्विकार का, किष्किंधा कांड संस्कार का, सुंदरकांड वास्तव में सुंदरता का, लंका कांड अहंकार मोचन का और उत्तरकांड भागवत साक्षात्कार का कांड है। उन्होंने कहा कि राम कथा चार स्थानों पर निरंतर चली आ रही है। कैलाश पर्वत पर भगवान शिव मां पार्वती को, तीर्थराज प्रयाग में याज्ञवल्क्य जी, नीलगिरि पर्वत पर कागभूसुंडी जी गरुड़ को और काशी में गंगा तट पर तुलसीदास जी अपनी लेखनी के माध्यम से मां गंगा को कथा सुनाते हैं। समिति ने बताया कि सात दिनों तक भक्तिमय वातावरण में कथा आयोजित हुई। मंगलवार को हवन पूजन और भंडारे का आयोजन होगा। कथा में यजमान अकिंचन मिश्रा, उनकी पत्नी सरिता मिश्रा, एडवोकेट संजीव पांडेय व पूजा पांडेय, महेश शर्मा, वीरेंद्र सिंह, जेपी सिंह, संतोष तिवारी, संजय तिवारी, अरविंद अग्निहोत्री, रणवीर सिसोदिया सहित बड़ी संख्या में भक्तगण मौजूद रहे।

कस्बे में जाम की समस्या से लोग परेशान, हररोज ठप हो रही यातायात व्यवस्था

● पटरी तक फैला अतिक्रमण, वाहनों को निकलना मुश्किल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज (रायबरेली)। कस्बे में जाम की समस्या लगातार बढ़ती जा रही है। लगभग हर दिन दोपहर बाद मेन रोड पर वाहनों की लंबी कतारें लग जाती हैं। लोग कई कई घंटे जाम में फंसे रहते हैं। स्कूल से लौटते बच्चों, मरीजों और ऑफिस जाने वाले लोगों को सबसे अधिक परेशानी होती है। मेनरोड पर अस्पताल मोड़ से लेकर करुणा बाजार चौराहा व रायबरेली रोड रेलवे क्रॉसिंग तक जाम रोज की कहानी बन गया है। दुकानों के सामने गलत तरीके से खड़े वाहन, रोड तक ठेलों और सब्जी दूकानदारों का कब्जा और बढ़ते ट्रैफिक दबाव से हालात बिगड़ जाते हैं। रेलवे गेट बंद होते ही जाम और भी बढ़ जाता है। कई बार छोटे वाहन आडे तिरछे फंस जाते हैं। इससे सड़क पर दोनों ओर की लाइनें लंबी होती चली जाती हैं। चौपहिया वाहन, स्कूल वाहन, एंबुलेंस यहाँ तक कि बाइक सवार भी जाम में अटक जाते हैं। गाड़ियों में बैठे यात्री परेशान हो उठते हैं। कई लोगों को निकलने से पहले खुद वाहन से उतरकर जाम खुलवाते देखा जा सकता है। ड्यूटी में तैनात होमगॉर्ड और पुलिसकर्मी हर दिन जाम खोलने में जुटे रहते हैं। लेकिन स्थायी समाधान न होने से हालात दोबारा बिगड़ जाते हैं। बृजेश शर्मा, टीके शुक्ला, लाला अवस्थी, हृदयेश कुमार, विनय, शनि सिंह, रणवीर सिसोदिया, बबलू तिवारी, अतुल शर्मा सहित नगर वासियों ने बताया कि जाम के कारण व्यापार प्रभावित हो रहा है। लोग जरूरी खरीदारी करने के लिए मंडी आने से कतराने लगे हैं। व्यापारियों ने नगर में यातायात व्यवस्था सुधारने की मांग की है। व्यापारियों का कहना है कि नगर में अतिक्रमण हटाया जाए। उन्होंने प्रशासन से रोज रोज की इस समस्या से राहत दिलाए जाने की अपील की है।

पुलिस को मिली कामयाबी बाइक लूटकांड का बदमाश मुठभेड़ में गिरफ्तार, एसओजी और पुलिस की कार्रवाई

● पैर में गोली लगने से बदमाश घायल बाइक बरामद

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर जनपद सीतापुर के लहरपुर कोतवाली इलाके में बीते 4 दिन पूर्व हुई लूट की घटना का पुलिस ने खुलासा कर शातिर अपराधी को मुठभेड़ में गिरफ्तार किया है पुलिस और एसओजी टीम ने रविवार देर शाम को मुठभेड़ के दौरान धर-दबोचा, जबकि उसका एक साथी मौके से फरार हो गया गिरफ्तार आरोपी के कब्जे से लूटी गई मोटरसाइकिल, मोबाइल फोन, अवैध तमंचा व कारतूस बरामद किए गए हैं गौरतलब है कि 12 नवंबर को थाना लहरपुर क्षेत्र के ग्राम घुड़सरिया के पास हुई युवक से हुई बाइक लूट की घटना में पुलिस ने मुकदमा पंजीकृत कर जांच शुरू की थी। मामले के अनावरण के लिए पुलिस अधीक्षक ने संबंधित टीमों को कठोरतम कार्रवाई के निर्देश दिए थे। रविवार देर शाम पुलिस को मुखबिर के जरिए सूचना मिली कि घटना में शामिल आरोपी प्रियांशु पुत्र अमर सिंह निवासी जमसकरा, अपने एक साथी के साथ किसी अन्य वारदात को अंजाम देने की फिराक में है एसपी अंकुर अग्रवाल ने बताया कि सूचना पर पुलिस और एसओजी टीम ने घेराबंदी की कोशिश की, जिस पर मोटरसाइकिल सवार अपराधियों ने पुलिस पर फायरिंग शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई में आरोपी प्रियांशु के बाएं पैर में गोली लगी और वह गिरफ्तार कर लिया गया, जबकि उसका साथी अंधेरे का फायदा उठाकर फरार हो गया। गिरफ्तार आरोपी के पास से स्प्लेंडर प्लस मोटरसाइकिल (बिना नंबर प्लेट) जिसे घटना में लूटा गया था, वीबो कंपनी का मोबाइल फोन, 315 बोर का तमंचा, दो जिंदा और दो खोखा कारतूस तथा 1500 रुपये नकद बरामद हुए हैं। आरोपी को उपचार हेतु अस्पताल भेजा गया है। एसपी ने बताया कि गिरफ्तार प्रियांशु का आपराधिक इतिहास भी सामने आया है, जिसमें सीतापुर, हरगांव, सकरन और लखीमपुर खीरी क्षेत्रों में उसके खिलाफ कई गंभीर मुकदमे दर्ज हैं!!

100GB डेटा, 28 दिनों तक अनलिमिटेड कॉलिंग; सस्ते में कौन-सी कंपनी ले आई धमाकेदार ऑफर?

लखनऊ। भारत संचार निगम लिमिटेड (बीएसएनएल) ने स्पेशल टैरिफ वाउचर (एसटीवी) 251 जारी किया है। इसमें 28 दिनों तक असीमित कालिंग के साथ 100 जीबी हाईस्पीड डेटा व प्रतिदिन 100 एसएमएस मिलेंगे। यानी 8.96 रुपये प्रतिदिन खर्च कर ये सुविधाएं ले सकते हैं। मंडल कार्यालय के उपमहाप्रबंधक (विक्रय एवं विपणन) आलोक कुमार द्विवेदी ने बताया कि यह प्लान विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर शुरू किया गया है। हालांकि इसका लाभ कोई भी प्रीपेड ग्राहक ले सकता है। 100 जीबी डेटा खत्म होने के बाद 40 केबी प्रति सेकेंड गति पर असीमित डेटा मिलेगा। 13 दिसंबर तक रीचार्ज कराने वाले ग्राहकों को इस प्लान का लाभ मिलेगा।

उपजिलाधिकारी ने कई गांवों में जाकर एस आई आर की प्रक्रिया से लोगों को किया जागरूक

महराजगंज रायबरेली। उपजिलाधिकारी महराजगंज गौतम सिंह ने रविवार को क्षेत्र के कई गांवों में जाकर लोगों से मिलकर चुनाव आयोग द्वारा चलाए जा रहे विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान (एस आई आर) के तहत कस्बे के बगल स्थित पूरे सुखई आजाद नगर बूथ संख्या 257 व मऊ गर्वी के बरीबरा गांव में एस आई आर की प्रक्रिया से लोगों को जागरूक किया। आजाद नगर में बूथ संख्या 257 की बीएलओ आरती धीमान को नए मतदाताओं को शामिल व तलाक, मृतक व पलायित मतदाताओं को सूची से विलोपन की जानकारी दी। उपजिलाधिकारी गौतम सिंह ने बताया कि सभी लेखपालों को बीएलओ के साथ एस आई आर के सम्बन्ध में संवाद व सहयोग स्थापित कर कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए गए हैं। मतदाताओं से बातचीत कर आवश्यक दस्तावेज बीएलओ को देने साथ उनकी मदद करने की भी अपील की है।

उधार सिगरेट न देने पर रेता गला धारदार हथियार से हमला, युवक गंभीर पुलिस पर लापरवाही का आरोप

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर। जनपद सीतापुर के महमूदाबाद कोतवाली क्षेत्र के याकूबपुर गांव में उधार सिगरेट न देने को लेकर हुए विवाद में एक युवक पर धारदार हथियार से हमला कर दिया गया यह घटना रविवार देर रात हुई। घायल युवक को पुलिस ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) में भर्ती कराया है। पुलिस को दी गई जानकारी के अनुसार, याकूबपुर निवासी रामगुलाम पैंतेपुर में अजीत की किराना दुकान पर काम करते हैं। शनिवार को शुभम नामक एक युवक दुकान पर आया और उधार सिगरेट मांगी रामगुलाम ने सिगरेट देने से इनकार कर दिया, जिसके बाद शुभम ने उनकी पिटाई कर दी इस घटना के बाद रामगुलाम ने पैंतेपुर चौकी में शिकायत दर्ज कराई थी। हालांकि, रामगुलाम का आरोप है कि चौकी पुलिस ने इस मामले को गंभीरता से नहीं लिया, जिसके कारण रविवार को स्थिति बिगड़ गई। रविवार शाम को रामगुलाम का बेटा महेंद्र रावत लखनऊ से घर लौट रहा था और दुकान के पास पहुंचा। इसी दौरान शुभम ने रामगुलाम को जातिसूचक शब्द कहे। महेंद्र द्वारा इसका विरोध करने पर विवाद बढ़ गया शुभम अपने भाई के साथ आया और मारपीट के दौरान उसने महेंद्र के गले पर धारदार हथियार से हमला कर दिया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और घायल महेंद्र को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया, जहां उसे प्राथमिक उपचार दिया गया महमूदाबाद के कोतवाल अनिल सिंह ने बताया कि पूरे मामले की जांच की जा रही है और दोषियों के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई की जाएगी!

मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के एलुमनाई एसोसिएशन द्वारा प्रो0 (डा0) भरत राज सिंह को 'मोती पुरस्कार' से सम्मानित किया गया

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ राजधानी लखनऊ के वैश्विक एलुमनाई सम्मेलन-2025 में आठ विशिष्ट पूर्व छात्रों को विभिन्न श्रेणियों में प्रतिष्ठित 'मोती पुरस्कार' प्रदान किए गए।

लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड भारतीय नौसेना में असाधारण योगदान हेतु वाइस एडमिरल अशोक कुमार कालरा को प्रदान किया गया। प्रोफेशनल एक्सीलेंस अवार्ड उत्तर-पश्चिम रेलवे के अमिताभ, स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेस, लखनऊ के प्रो0 (डा0) भरत राज सिंह को उत्कृष्ट अकादमिक एवं शोध कार्य हेतु, तथा जेडब्ल्यू एनजी के शरद महेंद्र को प्रदान किया गया।

उद्यमिता एवं नवाचार पुरस्कार सारसा फाउंडेशन के संस्थापक कुलदीप त्यागी को दिया गया, जबकि अल्मा मेटर एवं समाज सेवा श्रेणी में विजय वाचवन (पैनासोनिक इंडिया) को सम्मानित किया गया। यंग अचीवर अवार्ड असम के घुबरी की एडीएम सृष्टि सिंह और डेल्हीवरी के सीनियर वाइस प्रेसीडेंट प्रशांत गाजीपुर को प्रदान किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इनमोबी एवं ग्लांस के संस्थापक एवं सीईओ नवीन तिवारी तथा विशिष्ट अतिथि एसजेवीएन लिमिटेड के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक रमेश नारायण मिश्रा उपस्थित रहे। अपने संबोधन में उन्होंने भारत की यात्रा 'मेड इन इंडिया' से 'इमैजिन्ड इन इंडिया' तक को रेखांकित करते हुए कहा कि विश्व आज मानव इतिहास के सबसे रोमांचक युग में प्रवेश कर रहा है, जिसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जलवायु तकनीक और जैव अभियांत्रिकी दिशा दे रहे हैं। उन्होंने युवाओं को बड़े सपने देखने, जिम्मेदारी से निर्माण करने और तकनीक को मानवीय बनाए रखने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि भारत अब वैश्विक विकास का केवल सहभागी नहीं, बल्कि उसका प्रेरक बन चुका है। कार्यवाहक निदेशक प्रो0 शुभी पुरवार ने पुरस्कार विजेता पूर्व छात्रों को संस्थान का गौरव बताया। वैश्विक एलुमनाई सम्मेलन-2025 के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. अवनीश कुमार दुबे ने कहा कि विश्वस्तरीय संस्थानों के विकास का बड़ा हिस्सा उनके पूर्व छात्रों की सक्रिय सहभागिता से सम्भव होता है।

अपने उद्बोधन में प्रो0 भरत राज सिंह ने कहा कि यह सम्मान उनकी जीवन यात्रा के उन सभी पुरस्कारों में से एक विशिष्ट है, जिनमें 1965 से अब तक राज्यपाल, मुख्यमंत्री, राष्ट्रपति एवं विश्वविद्यालयों द्वारा दिए गए अकादमिक और शिक्षण उत्कृष्टता सम्मान शामिल हैं।

उन्होंने कहा कि मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, प्रयागराज के शिक्षकों ने केवल ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन-मूल्य भी प्रदान किए, और वैश्विक समस्याओं में अवसर खोजने की प्रेरणा दी। उन्होंने बताया कि इन्हीं शिक्षाओं ने उन्हें अनेक ऊँचाइयों तक पहुँचाया–अमेरिका के हाई स्कूल (कक्षा 9-12) की शिक्षा प्रणाली में उनके कार्यों का उपयोग किया और नासा के ग्लेशियर पिघलाव संबंधी शोध-पोर्टल पर उनके विश्लेषण को स्थान मिला।

उन्होंने यह भी साझा किया कि कार्बन उत्सर्जन कम करने हेतु वायु-चालित शून्य-प्रदूषण मोटरबाइक इंजन 'एयर-ओ-बाइक' के अनुसंधान ने उन्हें वैज्ञानिक नवाचार का अनूठा अवसर प्रदान किया।

श्री गायत्री महायज्ञ की 68वीं वर्षगांठ की तैयारियां तेज

हमीरपुर :- सुमेरपुर कस्बा में श्री गायत्री महायज्ञ की 68वीं वर्षगांठ की तैयारियां जोरों पर हैं। आगामी 24 नवंबर से 4 दिसंबर तक होने वाली इस विशाल धार्मिक आयोजन के लिए तपोभूमि प्रांगण को चकाचक बनाया जा रहा है। वर्ष 1957 में ब्रह्मलीन संत स्वामी रोटीराम महाराज नागा स्वामी जी ने कस्बे के इस निर्जन भुतहा स्थान पर विशाल गायत्री महायज्ञ कराकर मां गायत्री की स्थापना कराई थी। तब से यह भुतहा स्थान तपोस्थली बन गया है। प्रतिवर्ष इस महायज्ञ की वर्षगांठ श्रद्धा उत्साह के साथ मनाई जाती है। इस वर्ष यह धार्मिक आयोजन 24 नवंबर से शुरू हो रहा है। मेला मैदान सजकर तैयार होने लगा है। श्रीमद् भागवत कथा पंडाल की तैयारी शुरू हो गई है। तपोभूमि के साथ देवी देवताओं के मंदिरों की साफ सफाई का कार्य चरम पर है। यज्ञवेदी को चकाचक किया जा रहा है। यहां पर 65 कर्मकांडी ब्राह्मण निरंतर श्री गायत्री महामंत्र का जाप करके चार दिसंबर को सुबह पूर्णाहुति देंगे। इसके बाद विशाल भंडारे के साथ दस दिवसीय धार्मिक आयोजन का समापन होगा।

P 34 प्रीमियर लीग का रोमांचक फाइनल, पंकज पारा आर्यंस ने शाने मच्छरेटा को हराकर जीता खिताब, मंत्रियों ने किया सम्मानित

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर। P 34 प्रीमियर लीग का बहुप्रतीक्षित फाइनल मुकाबला रविवार को शानदार माहौल में खेला गया, जिसमें पंकज पारा आर्यंस ने दमदार प्रदर्शन करते हुए शाने मच्छरेटा को हराकर खिताब अपने नाम किया। मैदान में मौजूद हजारों दर्शकों ने पूरे मैच को बेहद रोमांचक बना दिया और खिलाड़ियों का जोरदार उत्साहवर्धन किया।

फाइनल में मंत्रियों और जिला अध्यक्ष की विशेष उपस्थिति

फाइनल मुकाबले की शोभा तब और बढ़ गई जब कार्यक्रम में नगर विकास राज्यमंत्री राकेश राठौर एवं कारागार राज्यमंत्री सुरेश राही तथा भाजपा के ज़िला अध्यक्ष राजेश शुक्ला विशेष रूप से मौजूद रहे। उन्होंने खिलाड़ियों से मुलाकात की, उत्साह बढ़ाया और पुरस्कार वितरण में हिस्सा लिया।

विजेता और उपविजेता को मिले आकर्षक पुरस्कार

आयोजन समिति की ओर से फाइनल विजेता पंकज पारा आर्यंस को 1 लाख रुपये व ट्रॉफी की पुरस्कार राशि दी गई, जबकि उपविजेता शाने मच्छरेटा को 51,000 रुपये का इनाम व ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया। पुरस्कार वितरण के दौरान मैदान तालियों और नारों से गुंजायमान हो उठा।

टूर्नामेंट आयोजन में कई लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका

क 34 प्रीमियर लीग इस वर्ष उत्कृष्ट प्रबंधन, अनुशासन और साफ-सुथरे आयोजन के लिए खास तौर पर चर्चा में रहा।

शाहनवाज़ हुसैन ने टूर्नामेंट में मीडिया कोऑर्डिनेटर की भूमिका निभाई।

सागर गुप्ता इस लीग के ब्रांड एंबेसडर रहे, जिन्होंने बहुत मेहनत कर आयोजन को सफल बनाया।

आयोजन समिति के अध्यक्ष सरताज खान, उपाध्यक्ष पंकज मस्सा और नीशू ने पूरे टूर्नामेंट को सफलतापूर्वक संचालित किया।

टूर्नामेंट के आयोजक आदिल और अनस इस आयोजन की मूल आधारशिला रहे। वहीं अबुल हसन मून, नेहाल इक़बाल मोनिस और अन्य सदस्यों की अथक मेहनत से यह टूर्नामेंट पूरी तरह सफल हो सका।

रोमांचक खेल, शानदार वातावरण

फाइनल मैच की हर गेंद ने दर्शकों को रोमांचित किया। बल्लेबाज़ों के आकर्षक शॉट्स और गेंदबाज़ों की शानदार गेंदबाज़ी ने मुकाबले को यादगार बना दिया। दर्शकों की भारी भीड़ ने पूरे मैच के दौरान उत्साह का माहौल बनाए रखा।

क 34 प्रीमियर लीग का यह फाइनल सीतापुर में क्रिकेट प्रेमियों के लिए एक यादगार दिन बन गया और आयोजन समिति की मेहनत तथा खिलाड़ियों के उम्दा खेल का बेहतरीन उदाहरण पेश किया।

सिधौली में उन्मुक्त कार्यक्रम के तहत 4-दिवसीय 'मैं भी चैंपियन तुम भी चैंपियन' प्रशिक्षण सम्पन्न

सिधौली, सीतापुर- मिलान संस्था द्वारा संचालित उन्मुक्त कार्यक्रम के अंतर्गत स्वरचना स्कूल, सिधौली में लगभग 100 किशोर-किशोरियों के लिए आयोजित चार दिवसीय जीवन कौशल प्रशिक्षण उत्साहपूर्ण और इंटरएक्टिव माहौल में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों ने टीम वर्क, नेतृत्व क्षमता, संवाद कौशल और वकालत जैसे महत्वपूर्ण विषयों को गतिविधियों, समूह चर्चाओं और रोल-प्ले के माध्यम से सीखा। बच्चों की सक्रिय भागीदारी ने सत्रों को और अधिक जीवंत बनाया और उन्हें वास्तविक परिस्थितियों को समझने व उचित प्रतिक्रिया विकसित करने में मदद की। प्रशिक्षण का संचालन मिलान संस्था के ट्रेनिंग ऑफिसर आलोक शुक्ला, अमित कुमार, और दीपाली शर्मा द्वारा किया गया। प्रशिक्षण के दौरान ब्लॉक समन्वयक एवं फैसिलिटेटर शोभा पाल, रजनीश,यादव शिवाकांत, लवकुश और अन्य फैसिलिटेटर भी उपस्थित रहे। मिलान संस्था का उद्देश्य किशोर-किशोरियों को आत्मविश्वासी, सक्षम और नेतृत्व के लिए तैयार बनाना है, ताकि वे समाज में सकारात्मक भूमिका निभा सकें।

संक्षिप्त खबरें

जिलाधिकारी ने जनसुनवाई कर शिकायतों का मौके पर कराया निस्तारण

हमीरपुरः- जिलाधिकारी घनश्याम मीना ने कलेक्ट्रेट कार्यालय में जनसुनवाई आयोजित कर आमजन की शिकायतों को सुनकर संबंधित अधिकारियों को प्राप्त प्रकरणों के गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध निस्तारण के निर्देश दिए। जनसुनवाई में कुल 93 शिकायतें दर्ज की गईं। जिनमें से अधिकांश का जिलाधिकारी द्वारा तत्काल मौके पर निस्तारण कर दिया गया। शेष शिकायतों के समाधान हेतु जिलाधिकारी ने सभी एसडीएम, खंड विकास अधिकारियों तथा अन्य संबंधित अधिकारियों के साथ वर्चुअल/जूम एप के माध्यम से बैठक कर उन्हें तुरंत कार्रवाई करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने कहा कि सभी एसडीएम, बीडीओ एवं विभागीय अधिकारी अपने-अपने कार्यालयों में नियमित रूप से जनसुनवाई करें तथा प्राप्त समस्याओं का शीघ्र एवं प्रभावी निस्तारण सुनिश्चित करें। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस कार्य में किसी भी प्रकार की शिथिलता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने निर्देशित किया कि जनसुनवाई, आईजी आरएस तथा अन्य माध्यमों से प्राप्त शिकायतों पर अधिकारी स्वयं मौके पर जाकर जांच करें और उनका गुणवत्तापूर्ण निस्तारण कर निर्धारित समय सीमा में आख्या प्रेषित करें।

शिविर का किया गया आयोजन

बिसवां सीतापुर। आम जन मानस जानकल्याणकारी योजनाओं का आसानी से शुलभ हो सके इसके लिए विभिन्न शिविरों का आयोजन अर्जुनगढ़ कंदुनी में किया गया। शिविरों का शरद चौधरी एवं आयोजक ,प्रमुख समाजसेवी अरिंजय चौधरी ने संयुक्त रूप से फ़ीता काटकर शुभारंभ किया। आयोजक अरिंजय चौधरी ने कहा कि इन शिविरों के माध्यम से बड़ी संख्या में ग्रामीणों की विभिन्न आवश्यक सेवाएं को लेकर नए राशन कार्ड, आधार कार्ड, जाति, आय एवं निवास प्रमाण पत्र ऑनलाइन आवेदन आवेदन कराने जैसी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं। वहीं 5दिव्यांगों को ट्राई साइकिल प्रदान की गई। उन्होंने बताया कि इससे पूर्व कई गांवों में शिविरों का आयोजन किया जा चुका है। टीम में अशोक बाजपेयी, उमेश कुमार, शकील अहमद, राजकिशोर सिंह, सुनील वर्मा, प्रदीप यादव, भरत प्रसाद एवं प्रधान मिश्री लाल प्रजापति, रिशीश शुक्ला, प्रमोद अवस्थी, शेर मोहम्मद, शेखर, हसन मियां आदि मौजूद रहे।

पूर्वोत्तर की कला-संस्कृति से महकेगा प्रयागराज

प्रयागराज। उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र की ओर से प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला भव्य राष्ट्रीय शिल्प मेला इस वर्ष भी 1 दिसंबर से शुरू होने जा रहा है। दस दिनों तक चलने वाले इस विशाल आयोजन में देश के 20 राज्यों से आने वाले दर्जनों शिल्पकार अपनी पारंपरिक कलाओं, हस्तशिल्प और लोककला का प्रदर्शन करेंगे। रंग-बिरंगी भारतीय संस्कृति को एक ही स्थान पर देखने का यह अनूठा अवसर एक बार फिर प्रयागराज को मिलने जा रहा है।इस बार मेले की खास थीम पूर्वोत्तर भारत की कला, संस्कृति और खानपान रहेगी। असम, नागालैंड, मणिपुर और मिजोरम से बड़ी संख्या में कलाकार अपने विशेष लोकनृत्य, लोकगीत और सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देंगे। वहीं इन राज्यों के खास पारंपरिक व्यंजन–जैसे असम का जोलपान, नागालैंड का बांस- करी, मणिपुर के एथनिक फूड–भी शहरवासियों का स्वाद बढ़ाएंगे। उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के अधिकारियों के अनुसार मेले की तैयारियां अंतिम चरण में हैं। मंच की साज-सज्जा, प्रदर्शनी का लेआउट, कलाकारों की प्रस्तुति और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का पूरा शेड्यूल तय कर लिया गया है। दस दिनों तक चलने वाला यह मेला प्रयागराज के लोगों को देश की विविधता, परंपराओं और जीवंत सांस्कृतिक धरोहर को करीब से देखने और महसूस करने का सुनहरा अवसर प्रदान करेगा।

नगर संसाधन केंद्र में अनुशासन रसातल में- आउटसोर्सिंग कर्मचारियों की मनमानी चरम पर

● कार्यालय में हस्ताक्षर कर गायब होने की प्रवृत्ति से विभागीय कामकाज ठप

सुबह 11 : 11 बजे तक सूना पड़ा नगर संसाधन केंद्र, केवल आशीष चौधरी कम्प्यूटर आपरेटर, जितेन्द्र राजपूत एम आई एस कर रहा था ड्यूटी

नगर संसाधन केंद्र में आउटसोर्सिंग कर्मचारियों की मनमानी जारी- समय के बाद आना और समय से पहले जाना बना आम चलन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता
संवाददाता- देवेंद्र साहू

ललितपुर। नगर संसाधन केंद्र नगर क्षेत्र में इस समय अव्यवस्था का आलम इस कदर हावी है कि विभागीय अनुशासन और प्रशासनिक नियंत्रण दोनो ही बेअसर साबित हो रहे हैं। केंद्र में तैनात आउटसोर्सिंग कर्मचारी मनमानी के ऐसे दौर में पहुँच चुके हैं जहाँ न तय समय का पालन हो रहा है, न दायित्वों का निर्वहन। एबीएसए द्वारा बार-बार दी गई चेतावनियाँ, निर्देश और औचक निरीक्षण भी उनकी शैली को नहीं बदल सके। कर्मचारियों की यह ढीली कार्यप्रणाली अब विभाग के उच्च अधिकारियों के संज्ञान तक पहुँच चुकी है और गंभीर सवाल खड़े कर रही है। खंड शिक्षा अधिकारी नगर क्षेत्र ने कई दौर के निरीक्षण, मौखिक चेतावनी और लिखित निर्देश जारी किए, फिर भी न तो कर्मचारियों के समय पर पहुँचने की स्थिति में सुधार हुआ और न ही उनके कार्यालयी व्यवहार में।

शिक्षा विभाग की अनुशासनहीनता अब खुलकर सामने आने लगी है। नगर संसाधन केंद्र में सोमवार की सुबह जब मीडिया कर्मी पहुंचे तो नजारा चौंकाने वाला था। सुबह 11:11 बजे तक पूरे कार्यालय में आशीष चौधरी कम्प्यूटर आपरेटर, जितेन्द्र राजपूत एम आई एस मौजूद थे, जबकि अन्य किसी भी कर्मचारी की उपस्थिति नहीं थी। कार्यालय का माहौल सन्नाटे में डूबा हुआ था, न कोई क्लर्क, न लिपिक, न ही प्रभारी अधिकारी। यह स्थिति तब है जब बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा समयपालन और उपस्थिति को लेकर कई बार सख्त निर्देश दिए जा चुके हैं। फिर भी नगर संसाधन केन्द्र जैसे महत्वपूर्ण कार्यालय में इस तरह की मनमानी और लापरवाही यह दिखाती है कि अधिकारी स्वयं भी अनुशासन लागू कराने में नाकाम हो रहे हैं। स्थानीय शिक्षकों ने बताया कि यहां अक्सर यही हाल रहता है, कर्मचारी देर से आते हैं और जल्दी निकल जाते हैं। शिक्षा व्यवस्था से जुड़े कई आवश्यक कार्य, जैसे वेतन बिल, अवकाश स्वीकृति, डाटा अपडेट और विद्यालयों से संबंधित पत्राचार, इन कर्मचारियों की गैरहाजिरी के कारण रुक जाते हैं। इस पूरे मामले ने न केवल शिक्षा विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़ा कर दिया है, बल्कि यह भी दर्शा दिया कि धरातल स्तर पर भी निगरानी व्यवस्था केवल कागजों तक सीमित है।

समय पालन की धज्जियां, सुबह 11: 11 बजे तक सूना पड़ा दफ्तर

जब मीडिया ने मौके पर जाकर हकीकत देखी तो केवल आशीष चौधरी कम्प्यूटर आपरेटर, जितेन्द्र राजपूत एम आई एस अपने डेस्क पर बैठे मिले। वाकी समस्त स्टाफ समय पर नहीं मिला। यानी जिस दफ्तर से पूरी शिक्षा व्यवस्था की रिपोर्ट तैयार होती है, वही अनुशासन की धज्जियां उड़ा रहा है। लोगों का कहना है कि अगर यही हाल रहा तो विभागीय कामकाज पर गहरा असर पड़ेगा।

बीएसए की कार्यप्रणाली पर उठे सवाल

जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी पर सवाल उठना लाजिमी है। शिक्षकों ने आरोप लगाया कि बीएसए न तो औचक निरीक्षण करते हैं, न ही अनुशासनहीन कर्मचारियों पर कोई कार्यवाही। जबकि नगर संसाधन केन्द्र बेसिक शिक्षा विभाग के कार्यालय से चंद कदमों की दूरी पर स्थित है, जिसके बाद भी कार्यालय की स्थिति चिंताजनक है। कुछ शिक्षकों का कहना है कि कार्यालय में मनमानी करने वाले कर्मचारियों को अधिकारी का संरक्षण प्राप्त है, इसीलिए वे बिना डर देर से आते हैं। यह पूरा मामला विभागीय सुस्ती और निगरानी की कमी को उजागर करता है।

कर्मचारियों के आने-जाने का कोई निर्धारित समय नहीं

नगर संसाधन केंद्र में कर्मचारियों के लिए कार्यालय में आने-जाने का कोई तय समय नहीं है। यह स्थिति न केवल कार्यालय के कार्यों में अव्यवस्था का कारण बनती है, बल्कि सरकारी कार्यों की क्षमता पर भी प्रतिकूल असर डाल रही है। अगर कर्मचारियों का समय पर दफ्तर में न पहुंचना और बिना कारण लापरवाही दिखाना जारी रहेगा, तो यह सार्वजनिक सेवाओं की गुणवत्ता को भी प्रभावित करेगा। विभागीय सूत्र बताते हैं कि एमआईएस कोर्डिनेटर चुपचाप आकर हस्ताक्षर करके अपने पटल से गायब हो जाते हैं और सहायक लेखाकार की भी यही स्थिति है, क्वालिटी कोऑर्डिनेटर सक्षम अधिकारी के बेहद करीबी होने के कारण 12 बजे कार्यालय में आना बताया जाता है। जिसकी पुष्टि गोपनीयता निरीक्षण से की जा सकती है।

बीएसए की चुप्पी और बढ़ती अनियमितताएं

शासन की इस लापरवाही पर बेसिक शिक्षा अधिकारी (बीएसए) की चुप्पी भी चिंताजनक है। ऐसा प्रतीत होता है कि बीएसए इस स्थिति को सुधारने में दिलचस्पी नहीं रखते, और नगर संसाधन केंद्र में बढ़ती अनियमितताओं पर उनका कोई ध्यान नहीं है। अधिकारी की उदासीनता के कारण कर्मचारियों के लिए किसी प्रकार की जिम्मेदारी नहीं बची है।

नगर संसाधन केंद्र में कवरेज के दौरान पत्रकार से अभद्रता

प्रेस कार्ड की फोटो लेकर मुकदमा लिखवाने दी धमकी

नगर संसाधन केंद्र में कवरेज करने पहुँचे एक स्थानीय पत्रकार के साथ अभद्रता और धमकी दिए जाने का मामला उजागर हुआ है। सोमवार को पत्रकार केंद्र में कर्मचारियों की उपस्थिति और कार्यप्रणाली से जुड़ी शिकायतों की वास्तविक स्थिति जानने पहुँचे थे। इसी दौरान वहाँ तैनात आशीष चौधरी कम्प्यूटर आपरेटर ने उनके साथ अभद्र व्यवहार किया और पत्रकार के प्रेस कार्ड की फोटो खींचकर मानहानि का मुकदमा लिखवाने की धमकी तक दे डाली।

जानकारी के अनुसार, नगर संसाधन केंद्र में लंबे समय से कर्मचारियों के समय पर न पहुँचने की शिकायतें मिल रही थीं। कई बार कर्मचारी निर्धारित समय से काफी देर बाद पहुँचते हैं, जिससे लोगों को परेशानी होती है। इसी अव्यवस्था की कवरेज के दौरान पत्रकार से आशीष चौधरी कम्प्यूटर आपरेटर भड़क उठा और अभद्र भाषा का उपयोग करते हुए दबाव बनाने की कोशिश की।

मौके पर मौजूद लोगों का कहना है कि पत्रकार शांत तरीके से अपनी रिपोर्टिंग कर रहे थे, लेकिन आशीष चौधरी कम्प्यूटर आपरेटर ने जानबूझकर विवाद खड़ा किया ताकि लापरवाही छुपाई जा सके। बाबू द्वारा प्रेस कार्ड की फोटो लेकर मानहानि का मुकदमा दर्ज कराने की धमकी देना पत्रकारों को डराने का प्रयास माना जा रहा है।

घटना के बाद स्थानीय पत्रकारों में रोष व्याप्त है। उन्होंने कहा कि मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है और किसी भी सरकारी कार्यालय की अव्यवस्था को उजागर करना पत्रकार का कर्तव्य है, न कि अपराध। पत्रकार संघ ने ऐसे कर्मचारियों पर कार्रवाई की मांग की है जो अपने कर्तव्यों में लापरवाही बरतते हुए पत्रकारों को धमकाते हैं।

बस की टक्कर से चरवाहा महिला और मवेशियों की मौत, दो घायल

हमीरपुर :- कुरारा थाना क्षेत्र के झलोखर गांव में रविवार शाम डबल टेकर बस की टक्कर से महिला व बकरियो की मौत हो गई।महिला के पति ने बस नंबर के आधार पर थाने मे रिपोर्ट दर्ज कराई है। कुरारा थाना क्षेत्र के झलोखर गांव निवासी रामबाबू पुत्र रामकिशन ने थाने में दी तहरीर में बताया कि रविवार की शाम लगभग साढ़े पांच बजे उसकी पत्नी अनीता (40वर्ष), अन्य चरवाहों शशि व राम औतार के साथ अपने जानवर चराकर घर वापस आ रहे थे, उसी दौरान गांव के बाहर कालपी-हमीरपुर स्टेटहाईवे पर तेज रफ्तार से आ रही डबल टेकर बस के चालक ने लापरवाही से चलाते हुए टक्कर मार दी, जिससे उसकी पत्नी और बकरियो व भैंस के बच्चे की मौत हो गयी जबकि शशि व रामऔतार घायल हो गए। पुलिस ने मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा और पीड़ित पति की तहरीर पर बस नंबर UP93TT3812 के आधार पर अज्ञात चालक के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर मामले की जाँच शुरु कर दी है।

गोबरिया गाँव में बन रही सड़क पर भ्रष्टाचार के बादल, ग्रामीणों में उबाल

बेडीपुलिया-गोबरिया मार्ग पर घटिया निर्माण का आरोप, जिलाधिकारी से जांच की मांग

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

चित्रकूट। मुख्यालय से सटे गोबरिया गांव में लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) द्वारा बनाई जा रही सड़क भ्रष्टाचार और लापरवाही की भेंट चढ़ती दिखाई दे रही है। ठेकेदार की मनमानी और मानकों को ताक पर रखकर हो रहे निर्माण कार्य से ग्रामीणों में भारी रोष है। मामले की शिकायत ग्रामीणों ने जिलाधिकारी से करते हुए संपूर्ण प्रकरण की जांच कराने की मांग उठाई है।

ग्रामीणों के अनुसार बेडीपुलिया से गोबरिया मार्ग पर सड़क निर्माण पूरी तरह नियमविरुद्ध तरीके से किया जा रहा है। आरोप है कि बिना तारकोल डाले सीधे डामर बिछा दिया गया, जिससे निर्माण शुरू होते ही सड़क कई स्थानों पर उखड़ने लगी है। सड़क की परत हाथ लगाने भर से झड़ रही है, जिससे निर्माण कार्य की गुणवत्ता पर बड़े सवाल खड़े हो गए हैं।

ग्रामीणों का कहना है कि सड़क निर्माण में घटिया सामग्री के प्रयोग और निर्माण मानकों की अनदेखी से करोड़ों की सरकारी धनराशि पानी में जा रही है। स्थानीय लोगों ने बताया कि जब ग्रामीणों ने घटिया निर्माण का विरोध किया तो ठेकेदार के पति ने दबंगई दिखाते हुए उनसे गाली-गलौज और अभद्रता की। विरोध करने पर ग्रामीणों को धमकाए जाने की भी शिकायत है। घटना से आक्रोशित ग्रामीणों ने मामले की लिखित शिकायत उच्चाधिकारियों को भेजी है।

ग्रामीणों का कहना है कि सड़क निर्माण में बड़े पैमाने पर अनियमितताएँ हुई हैं, इसलिए पूरे मामले की उच्च स्तरीय जांच कराई जाए। ग्रामीणों ने अनुरोध किया कि अधिकारियों की निगरानी में सड़क की गुणवत्ता की जांच कर दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए। ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द कार्रवाई नहीं की गई तो वे आंदोलन करने को मजबूर होंगे।

वृद्धाश्रम में मासिक निरीक्षण एवं विधिक साक्षरता जागरूकता शिविर का हुआ आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर :- उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ एवं मनोज कुमार राय जनपद न्यायाधीश व अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशन में मुख्यालय के वृद्धाश्रम में मासिक निरीक्षण एवं विधिक साक्षरता जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव महेन्द्र कुमार पाण्डेय द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रबंधक जीतेन्द्र सिंह परमार तथा लीगल एड डिफेंस काउंसिल चीफ आनंद कुमार सक्सेना उपस्थित रहे। शिविर के दौरान 'माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण एवं कल्याण अधिनियम, 2007', के अंतर्गत वरिष्ठ नागरिकों को उनके विधिक अधिकारों एवं उपलब्ध कानूनी सहायता के विषय में विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम के दौरान कुल छह वृद्धजनों द्वारा प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किए गए। जिनमें पेंशन प्राप्त न होने, स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता तथा पारिवारिक विवादों से संबंधित समस्याएँ प्रमुख रहीं।

इन शिकायतों के निस्तारण हेतु पैरालीगल वॉलंटियर्स को निर्देशित किया गया कि वे सभी प्रार्थना पत्र संकलित कर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण को प्रेषित करें ताकि त्वरित समाधान सुनिश्चित किया जा सके। निरीक्षण के दौरान वृद्धाश्रम में कुछ व्यवस्थागत कमियाँ पाई गईं, जिनमें टूटी हुई फर्श, अस्वच्छ वॉश बेसिन, और सीढ़ियों की खराब स्थिति शामिल थीं। साथ ही यह भी पाया गया कि संवासियों की रजाई एवं गद्दे पिछले आठ वर्षों से परिवर्तित नहीं किए गए हैं जबकि नियमानुसार इन्हें प्रत्येक पाँच वर्ष में बदला जाना आवश्यक है। इन सभी बिंदुओं पर प्रबंधक को निर्देशित किया गया कि वह अपने मुख्यालय से पत्राचार करते हुए शीघ्र आवश्यक कार्यवाही कर सुधारात्मक उपाय कर रिपोर्ट जिला विधिक सेवा प्राधिकरण को प्रस्तुत करें। इसके अतिरिक्त, सभी दरवाजों पर मच्छररोधी जाली लगाने तथा समुचित सफाई एवं प्रकाश व्यवस्था सुनिश्चित करने का सुझाव दिया गया। बताया कि वृद्धजनों की शिकायतों के समाधान एवं वृद्धाश्रम की सुविधाओं में आवश्यक सुधार के लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा सतत निगरानी और कार्यवाही की जाएगी।

श्रीभूमि जिला के रामकृष्णनगर के चेरागी-रणपुर जीपी में साढ़े पांच करोड़ रुपये की समूह परियोजना का शिलान्यास

● विधायक विजय मालाकार ने कहा कि प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के नेतृत्व में असम के हर कोने में विकास की लहर बह रही है।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीभूमि: वर्तमान सरकार 'सबका साथ सबका विकास' सबका विश्वास इस नारे के माध्यम से भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में विकासात्मक कार्यों के जरिए हर ग्रामीण क्षेत्र में सड़कें, पुल, पानी और जल सुविधा के लिए PHE, छात्रों की शिक्षा के लिए शैक्षणिक संस्थानों का उन्नयन तथा मॉडल आंगनवाड़ी केंद्र और उच्च स्तर की विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से करोड़ों रुपये आवंटित कर रही है। ताकि सामान्य लोगों की समस्याओं का समाधान परियोजनाओं के माध्यम से किया जा सके। इसके फलस्वरूप भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा के नेतृत्व में असम के हर कोने में विकासात्मक कार्यों की बाढ़ आ रही है। भाजपा सरकार के कार्यकाल में राज्य के हर हिस्से में विकास की लहर बह रही है। सरकार 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' इस नारे की नीति में अडिग है। विपक्ष केवल वादों और आश्वासनों की राजनीति कर रहा है। नवगठित रामकृष्णनगर विधानसभा क्षेत्र के चेरागी बाजार-चेरागीनगर-रणपुर जीपी और विरजापुर-छुटोबालिया में पांच करोड़ पच्चास लाख की सामूहिक परियोजना की पट्टिका का अनावरण लोकप्रिय विधायक विजय मालाकार ने किया। 26वीं विधानसभा चुनाव की दिनांक करीब आने के साथ ही सत्तारूढ़ दल के विधायक अपनी सक्रियता बढ़ा रहे हैं और विधानसभा क्षेत्र के हर कोने में विकास के लिए काम कर रहे हैं। रामकृष्णनगर विधानसभा क्षेत्र के विधायक विजय मालाकार ने 17 नवंबर (सोमवार) को चेरागी बाजार-चेरागीनगर-रणपुर जीपी और विरजापुर-छुटोबालिया में एक ही दिन में पांच महत्वपूर्ण निर्माण परियोजनाओं की पट्टिकाओं का अनावरण कर काम की शुरुआत की। दोपहर सही हि NTIED 2024-25 परियोजना के तहत चेरागी बाजार हरगौरी मंदिर में कम्युनिटी हॉल का शुभ शिलान्यास किया, फिर 11 नंबर विरजापुर मॉडल आंगनवाड़ी सेंटर का शुभ शिलान्यास किया, इसके बाद रणपुर जीपी के बड़े बालिया में 2.80 करोड़ रुपये की महत्वपूर्ण नई पुल की शिलान्यास की, 9 नंबर चेरागीनगर मॉडल आंगनवाड़ी सेंटर का शुभ शिलान्यास किया, और छुटोबालिया में 2.20 करोड़ रुपये में महत्वपूर्ण नई पुल कामहत्त्वपूर्ण नए पुल की आधारशिला रखी गई और विशाल जनसभा में प्रतिभाग करते हुए सभा में विधायक विजय मालाकार ने कहा कि प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के नेतृत्व में असम के हर कोने में विकास की लहर दौड़ रही है। कांग्रेस के समय में सिर्फ सोने की राताबाड़ी बनाने और आधारशिला रखकर लोगों को सिर्फ और सिर्फ वादों की राजनीति की, विकास की बड़ी-बड़ी बातें कहकर वोट लेकर चले गए और दिखाई नहीं दिए, और चुनाव आने पर ही उपस्थित होते हैं, यही उनका असली चरित्र है। आधारशिला समारोह में जिले के उपाध्यक्ष विश्वतोष सेन, लालछड़ा जीपी अध्यक्ष संजय गोस्वामी, चेरेगी जिला परिषद सदस्य पंकज राय शर्मा, दुल्लभछड़ा मंडल अध्यक्ष चंदन भर, हेनॉय नाथ, पीडब्ल्यूडी विभाग के अधिकारी सुभ्रत दास, बानिब्रत चक्रवर्ती, निर्माण चक्रवर्ती, पंडित जयप्रकाश तिवारी, प्रधान शिक्षक बानिकांत नमःशूद्र,जिपी अध्यक्ष वीरेंद्र नमःशूद्र, पिक्लु नाथ, एपी सदस्यों के प्रतिनिधि संजीव दास, युवा मोर्चा रामकृष्णनगर मंडल अध्यक्ष निशीथ नाथ, सहित बीजेपी कार्यकर्ता और महिला गण उपस्थित थे।

पुण्यतिथि पर याद किए गए स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के पुरोधा लाला लाजपत राय

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुरः- देशभक्तों की देश के प्रति भूमिका के मद्देनजर वर्णिता संस्था के तत्वावधान में विमर्श विविधा के अन्तर्गत जिनका देश ऋणी है के तहत संस्था के अध्यक्ष डा. भवानीदीन ने लाला लाजपत राय की पुण्यतिथि पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि लाला लाजपत राय सही मायने में एक महान देशभक्त पुरोधा थे। इनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। लाला जी का पंजाब के फिरोजपुर के धुडकी गांव में राधाकृष्ण आजाद एवं गुलाब देवी के घर 28 जनवरी 1865 में जन्म हुआ था। राष्ट्रीय आन्दोलन की तिकड़ी लाल बाल पाल के रूप में बहुत प्रसिद्ध थी। इसी तिकड़ी में लाला लाजपत राय भी थे। आर्य समाज की स्थापना में इनका बड़ा योगदान था। 1928 में भारत में साइमन कमीशन आने पर सारे देश में विरोध हुआ था। इस विरोध प्रदर्शन के अगुवा कारों में लाला प्रमुख थे। इस पर गोरी सत्ता में

इन पर लाठीचार्ज हुआ और इस कारण इनकी मृत्यु हो गई थी। देश के युवा देशभक्तों ने लाला जी की मौत का बदला लेने का निश्चय किया। भगत सिंह एवं उसके मित्रों ने सान्डर्स की हत्या कर लाला लाजपतराय की मौत का बदला ले लिया। वर्णिता ने आज उनके योगदान को याद कर उन्हें भावभीनी श्रृद्धांजलि दी। इस कार्यक्रम में अशोक अवस्थी, सिद्धा, प्रेम, सागर, रिचा, भोलू सिंह, दयाराम सोनकर, रामनरायन सोनकर, रामबाबू, विकास, सतेन्द्र, राहुल प्रजापति आदि शामिल रहे।

सांसद खेल प्रतियोगिता आयोजित, विधायक ने फीता काटकर किया शुभारम्भ

देवरिया। सतासी इंटर कॉलेज, रुद्रपुर में युवा कल्याण एवं प्रांतीय रक्षक दल विभाग की ओर से सांसद/विधायक खेल प्रतियोगिता आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ केंद्रीय मंत्री व स्थानीय सांसद कमलेश पासवान और विधायक जय प्रकाश निषाद ने किया। विभिन्न स्पर्धाओं में खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। मुख्य विजेताओं में रितेश कुमार निषाद (1500 मीटर सीनियर),सनी कुमार यादव (1500 मीटर जूनियर),शैलेन्द्र (800 मीटर सब-जूनियर), निकेश यादव (400 मीटर सीनियर), ज्योति राजभर (200 मीटर सीनियर बालिका), वर्षा सिंह (100 मीटर जूनियर बालिका), सूरज पासवान (100 मीटर सब-जूनियर), प्रियंका (800 मीटर जूनियर), मिथुन विश्वास (100 मीटर सीनियर बालक) प्रमुख रहे। टीम प्रतियोगिताओं में वॉलीबॉल (बालक) में मढ़ौरा, वॉलीबॉल (बालिका) व कबड्डी (बालिका) में वर्दगोनीया, तथा कबड्डी (सब-जूनियर बालक) में इंदुपुर विजेता रहे। समापन पर विजेताओं को मेडल, ट्रॉफी और सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में युवा कल्याण अधिकारी एवं मंगल दल सदस्यों का सहयोग रहा।

राजकीय बीज भंडार प्रभारी की कार्यशैली का विरोध जता भाकियू ने सौंपा ज्ञापन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुरः- मौदहा कस्बा में बीते दस नवंबर को राजकीय बीज भंडार का शाम साढ़े छः बजे के बाद अपने चहेतों को गेहूं का बीज देने के लिए गेट खोला गया था तभी वहां मौजूद कुछ किसानों ने केंद्र प्रभारी का वीडियो बनाना शुरू कर दिया जिससे केंद्र प्रभारी आग बबूला हो गया और अपने गुर्गों से किसानों से मोबाइल छीनने को।कहा , जिसका वीडियो सोशल मीडिया में खूब वायरल हो रहा है।हालांकि स्वतंत्र प्राभात वाइरल वीडियो की पुष्टि नहीं करता।वहीं सोशल मीडिया में वायरल उक्त वीडियो तथा किसानों को समय से बीज न देने तथा बीज की कालाबाजारी करने वाले केंद्र प्रभारी के विरुद्ध भाकियू अराजनैतिक ने सोमवार को जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपते हुए निष्पक्ष जांच की मांग करते हुए आरोपी केंद्र प्रभारी के विरुद्ध भ्रष्टाचार अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज करने की मांग की है।

कस्बे के बीएसएनएल टावर के पास स्थित राजकीय बीज भंडार केंद्र से बीते 10 नवंबर को एक वीडियो सोशल मीडिया में खूब वायरल हो रहा है। जिसमें केंद्र प्रभारी परिसर में टहलते हुए देखा जा रहा है तथा कुछ लोग गोदाम के अंदर बीज की बोरियां इधर उधर कर रहे थे। उक्त घटना का वीडियो वहीं खड़े कुछ किसानों ने बनाकर सोशल मीडिया में वायरल किया है। वायरल वीडियो का संज्ञान लेकर सोमवार को भारतीय किसान यूनियन अराजनैतिक के जिलाध्यक्ष शिवपूजन पाल ने अपने साथियों समेत जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपते हुए बताया कि

उक्त केंद्र में तैनात प्रभारी संतोष पाल की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान खड़ा करते हुए किसानों की अनदेखी तथा अपने प्रियजनों को रात के अंधेरे में बीज देने का प्रयास करने का मुद्दा उठाया है। भाकियू जिलाध्यक्ष ने जिलाधिकारी से उक्त केंद्र प्रभारी संतोष पाल समेत उसके गुर्गों के विरुद्ध भ्रष्टाचार अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर कानूनी कार्रवाई करने की मांग की है।

बिरसा मुंडा जयंती पर आदिवासी समाज को जागरूक होने की पुकार

● कार्यक्रम में आदिवासी समाज के पारंपरिक लोकनृत्यों की आकर्षक प्रस्तुति।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

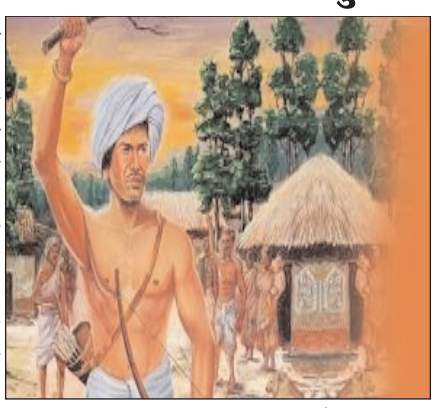

नारीबारी, प्रयागराज। बारा तहसील के नारीबारी स्थित सब्जी मंडी में बिरसा मुंडा जयंती पर आयोजित विशाल कार्यक्रम में वक्ताओं ने आदिवासी समाज से जागरूक होने की अपील की और केंद्र व राज्य सरकार पर उपेक्षा का आरोप लगाया।कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सांसद उज्जवल रमण ने कहा कि बिरसा मुंडा केवल आदिवासियों ही नहीं बल्कि दलित, वंचित और सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए भी प्रेरणा हैं। उन्होंने कहा कि 'अब आदिवासी समाज को जगना होगा। सरकार ने विकास के नाम पर सिर्फ ठगा है। शिक्षा, ग़रीबी और पिछड़ेपन के लिए केंद्र की मोदी सरकार और यूपी सरकार पूरी तरह जिम्मेदार हैं। 'उन्होंने आरोप लगाया कि चुनाव के समय आदिवासियों को थोड़े पैसों और शराब का लालच देकर वोट लिया जाता है और बाद में उन्हें उनके हाल पर छोड़ दिया जाता है। सांसद ने कहा कि संसद में वनवासी से आदिवासी दर्जा बहाल करने की बात मजबूती से उठाई गई, लेकिन सरकार ने ध्यान नहीं दिया।उन्होंने अपील की कि 'जब वोट मांगने आएं तो प्रलोभन से दूर रहकर उनसे पूछें कि हमें आदिवासी से वनवासी क्यों बनाया गया। अब हम अपने मताधिकार से जवाब देंगे। 'सभा में यमुनापार जिलाध्यक्ष अशोक सिंह पटेल ने बिरसा मुंडा के संघर्षपूर्ण जीवन और उनके क्रांतिकारी योगदान पर प्रकाश डाला। पूर्व विधायक रामकृपाल कोल ने आदिवासी समाज की समस्याओं को जोरदार ढंग से उठाया और कहा कि 'आज जरूरत है अन्याय के खिलाफ एकजुट होकर वर्तमान सरकार को सत्ता से हटाने की। 'सभा की अध्यक्षता जिला उपाध्यक्ष यमुनापार और पूर्व ब्लॉक प्रमुख गुलाब कली ने की। कार्यक्रम का संचालन रत्नेश वर्मा ने किया। जयंती कार्यक्रम का आयोजन जिला उपाध्यक्ष यमुनापार एवं जिला पंचायत सदस्य अवनीश कोल द्वारा किया गया।